श्री सद्गुरु वे नमः



बावन कसनी

कबीर साहिब को 52 बार सजाए मौत दी गई

साहिब बन्दगी



जो वस्तु मेरे पास है, ब्रह्माण्ड में कहीं नहीं है।

समझो यह मेरा अहंकार नहीं, मैं बढ़ाईवश भी नहीं कहता। आप सच मानना, अभी बार-बार चेताकर कह रहा हूँ, जब यहाँ से चला जाऊँगा तो दुनिया पछताएगी, क्योंकि सत्य है—मैं जिस वस्तु की बात कर रहा हूँ, वो भी इस संसार की नहीं है, तीन लोक में कहीं नहीं है। वो चौथे लोक की वस्तु है।

सार शब्द सो कहा न जाई। लिखा न जाई, पढ़ा न जाई॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो। बिन सतगुरु कोई नाहीं पाई॥

जब वो वस्तु मिलती है तो तीन चीज़ें आ जाती हैं। मैंने अपनी इस चीज़ का अनुभव एक-दो पर नहीं, बल्कि लाखों लोगों पर किया है। इसलिए इसमें कोई संशय नहीं है, पक्की बात है। तीन चीज़ें शर्तिया होती हैं। जिसे भी मैं नाम देता हूँ, तीन चीज़ें पक्का हो जाती हैं—

1. आत्मा और मन अलग हो जाते हैं। 2. संसार का आकर्षण समाप्त हो जाता है। 3. एक पूर्ण सुरक्षा मिल जाती है।

नतीजा सामने है। मेरा हर नामी नाम पाकर बदल जाता है। केवल '**नाम**' की ताकत से आत्मा कालपुरुष (निराकार मन) के चंगुल से छूटकर अपने सही घर जा सकती है। पर, यह नाम दुनिया में प्रचलित नामों से परे है। सद्गुरु द्वारा यह नाम देना कोई शब्द बताना नहीं है, आत्मा को चेतन करना है। आत्मा को उसकी शक्ति बताना है। सद्गुरु एक पल में आत्मा को चेतन कर देता है, वो अपनी सुरति में परमात्म-तत्व लाकर शिष्य के भीतर छोड़ता है। यही नाम-दान कहलाता है। इस नाम के बिना कोई भी जीव संसार-सागर से पार नहीं हो सकता।

श्री सद्‌गुरु वे नमः

बावन कसनी

कबीर साहिब को 52 बार सजाए मौत दी गई

– सद्‌गुरु मधु परमहँस जी



सन्त आश्रम रांजड़ी, पोस्ट राया, ज़िला साम्बा (जे. एण्ड के .)

बावन कसनी (कबीर साहिब को 52 बार सजाए मौत दी गई)

— सतगुरु मधु परमहंस जी

First Edition	—	July., 2015
Copies	—	5000

Website Address.
www.sahibbandgi.org
www.sahib-bandgi.org

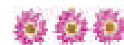
E-Mail Address.
satgurusahib@sahibbandgi.org

Editor

Sahib Bandgi Sant Ashram Ranjri
Post -Raya, Distt.-Samba (J & K)
Ph. (01923) 242695, 242602

प्रचार अधिकारी
— राम रतन, जम्मू

विषय सूची — पृष्ठ संख्या



दो शब्द

कबीर साहिब ने संसार में आकर धार्मिक पाखण्ड पर करारे प्रहार किये और सत्य-भक्ति का डंका बजाया। ऐसे में धार्मिक पाखण्डी मचल उठे। उन्होंने साहिब की जमकर निंदा की। उन्होंने साहिब की छवि को बिगाड़ने के लिए उन पर आरोपों की झड़ी लगा दी, पर साहिब नहीं रुके। उन्होंने पाखण्डियों से लाखों लोगों को बचा लिया। भोले-भाले लोगों को अपने चंगुल से छूटते देख पाखण्डियों ने साहिब को अपने रास्ते से हटाने के लिए मार डालने की योजनाएँ बनाईं। उन्हें मारने के लिए अनेक षड्यंत्र रचे गये।

दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोधी के गुरु पीर और वज़ीर शेख तकी की सहायता से पाखण्डियों ने कबीर साहिब की 52 बार कसनी ली। अनेक बार उन्हें मौत की सज़ा दी गयी। बादशाह ये सज़ाएँ साहिब को नहीं देता था। पर अपने धर्मगुरु पीर शेख तकी के आगे उसका वश भी नहीं चलता था। इसलिए उसने मजबूर होकर शेख तकी से यह कह दिया था कि तू जो चाहे कर, पर मैं कुछ नहीं करूँगा। वो बार-बार शेख तकी को समझाता भी था कि कबीर पर इतने जुल्म मत कर, वो सच्चा फ़कीर है, वो खुदा का रूप है। पर शेख तकी नहीं मानता था। वो साहिब पर जुल्म-पर-जुल्म करता जाता था और इस तरह उसने **साहिब जी को 52 बार सजाए मौत दी, जिसे बावन कसनी भी कहा जाता है।** पहले तो वो साहिब को जादूगर समझता था, पर आख़िर में उसे आभास हुआ कि साहिब इंसान नहीं हैं; वे तो स्वयं मालिक हैं और जीवों के कल्याण के लिए संसार में आए हैं।

तो धार्मिक पाखण्डियों ने शेख तकी की सहायता से कबीर साहिब की 52 बार जो कसनियाँ लीं, उन्हें मौत की जो-जो सज़ाएँ दीं, वे आगे चित्रों सहित दी गई हैं-

मानवता का महान् मसीहा

सतगुरु कबीर साहिब

सम्वत् 1455 सुदी 1398 ई. पूर्णिमा सोमवार के दिन अमृत वेला में महान् मानवतावादी सन्त सद्गुरू कबीर साहिब का अवतरण काशी के लहरतारा नामक तलाब में हुआ। उनके जन्म के विषय में जितनी शंकाएँ और भ्रम लोगों में हैं शायद ही किसी अन्य महात्मा के विषय में हो। किसी ने उन्हें कुंवारी ब्राह्मणी की सन्तान बताया, किसी ने अज्ञात बालक। किसी ने कुछ, किसी ने कुछ। आज भी उनका जन्म एवं जीवन संसार के लोगों के लिए रहस्य है। हालांकि उन्होंने अपने जीवन के विषय में स्वयं अपने शब्दों में रहस्य प्रकट किए हैं। अपना विवरण दिया है कि मैं उस परम सत्ता से शुद्ध चेतन रूप में अवतरित हुआ हूँ :

"सन्तों अविगत से हम आए, कोई भेद भरम ना पाये।
ना हम रहले गर्भवास में, बालक होई दिखलाये।
काशी तट सरोवर भीतर, तहाँ जुलाहा पाये॥
ना हमारे भाई बन्धु है, ना संग गिरही दासी।
नीरु के घर नाम धराये, जग में हो गई हाँसी॥
आणे तकिया अंग हमारी, अजर अमर पुर डेरा।
हुक्म हैसियत से चल आए, काटत यम का फेरा॥
काशी में हम प्रकट हुए, रामानन्द पर धाया।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, हंस चेतावन आया॥"

ऐसे अनेक स्थानों पर कबीर साहिब ने अपने विषय में अद्भुत रहस्य प्रकट किए हैं जिनके द्वारा प्रतीत होता है कि वे माता के पेट से नहीं जन्मे एवं उस परम पुरुष के अद्भुत प्रकाश से इस धरती पर उनका अवतरण हुआ। प्रिय पाठको! मेरा अभिप्राय किसी विवाद या संशय को उत्पन्न करना नहीं है, वरन् एक महान् सत्य को तर्क युक्त तरीके से आपके समक्ष रखना है। कबीर शब्द अपने आप में अर्थ समेटे है। **कथावीर कबीर कहाया।**

कक्का केवल नाम है, बब्बा वरण शरीर।
ररा सब में रम रहा, जिसका नाम कबीर॥
गगन मण्डल से उतरे, सद्गुरु सत्य कबीर।
जल मांहि पौढ़न किया, सब पीरों के पीर॥

ऐसे अनेकों शब्द स्पष्ट कर रहे हैं कि वे असाधारण थे। जितना विस्तृत व्यक्तित्व कबीर साहिब का मिलता है शायद ही किसी अन्य का हो।

समाज **उन्हें महान् समाज सुधारक** के रूप में, कार्ल मार्क्स से पहले का समाज सुधारक मानते हैं। कवि लोग उनकी सरल शैली एवं रचनाओं को देखकर उन्हें **कवि सम्राट** मानते हैं। तर्कवादी उन्हें **परम स्पष्ट वक्ता** के रूप में मानते हैं। ब्रह्मज्ञानी उनकी ज्ञान शैली का अध्ययन करने पर उन्हें **ब्रह्मवेता** के रूप में मानते हैं। सन्तों में उनका स्थान **सन्त सम्राट या प्रथम सन्त सद्‌गुरु** के रूप में मानते हैं। योगी लोग उनके परा रहस्यों एवं साधना के आन्तरिक आयामों का मनन करने पर उन्हें **परम योगेश्वर** मानते हैं। व्यंगकार उन्हें **महान् व्यंगकार** मानते हैं। भक्त लोग कबीर साहिब की भक्ति रस की रचनाओं को पढ़कर उन्हें **परम भक्त** मानते हैं। न्याय कर्ता उनके तर्कों का अध्ययन करके उन्हें **महान् न्यायवेता** मानते हैं। रहस्यवादी उन्हें अध्यात्म जगत का **महान रहस्यवादी** मानते हैं। ज्ञानियों में उनका स्थान वैसा है जैसे सरिताओं में गंगा। उन्होंने किसी धर्म की स्थापना नहीं की, उनका एक लक्ष्य था, केवल मानव को जगाना। मानवता को जगाने के साथ उन्होंने सर्वशक्तिमान की भक्ति का संदेश दिया। कुछ लोग उन्हें **खण्डनवादी** मानते हैं परन्तु उन्होंने हर भक्ति का महात्म बताया, साथ में यह भी बताया कि **किस भक्ति से किस तत्व की प्राप्ति होती है चार तरह की मुक्तियों के स्थान (सामिप्य मुक्ति, सालोक्य, सारोप्य तथा सायुज्य मुक्ति)** का वर्णन किया, इनको चार किस्म के स्वर्ग भी कहा, उनकी प्राप्ति के सूत्र बताए जो वेदों से मिलते हैं। परमनिर्वाण के विषय में बताया जहाँ जाकर आत्मा स्थाई अमरतत्व को प्राप्त होती है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को पिंड में बताया, उनके साधना के सूत्र सर्वमान्य हुए, उनकी शैली को सबने स्वीकार किया।

भक्ति को कबीर साहिब जी ने तीन भागों में बाँटा

सगुण भक्ति (वर्णनात्मिक शब्द)	निर्गुण भक्ति (धुनात्मिक शब्द)	परा भक्ति (मूकात्मिक शब्द)

सुन्न गगन में सबद उठत है, सो सब बोल में आवै।
नि:सबदी वह बोलै नाहीं सो सत सबद कहावै।। —पलटू साहिब जी

सगुण भक्ति करे संसारा। निर्गुण योगेश्वर अनुसारा।
इन दोनों के पार बताया। मेरो चित्त एको नहीं आया।।

आपने सगुण और निर्गुण इन दोनों के पार बताया। दादू दयाल जी ने कहा–

कोई सगुण में रीझ रहा, कोई निर्गुण ठहराय।
अटपट चाल कबीर की, मौसे कही न जाय।।

जाप मरे अजपा मरे, अनहद भी मर जाय।
सुरति समानी शब्द में, उसको काल न खाय।।

अंदर धुनें हैं। कुछ इसे **सुरति शब्द अभ्यास** भी कह रहे हैं और उनमें खो जाते हैं। कुछ **धुनों को ही परमात्मा** कह रहे हैं। पर इससे तुरीयातीत की अवस्था से पार नहीं जा सकते हैं। सबका अपना वजूद है। धुनें ख़त्म हो जाती हैं। फिर यह कौन-सा शब्द हुआ! यानी **धुनात्मिक शब्द** भी नहीं है, **वर्णनात्मिक शब्द** भी नहीं है। साहिब कह रहे हैं– 'सो तो शब्द विदेह॥' भाव शरीर से बाहर **मूकात्मिक शब्द** है अर्थात् बिना आवाज़ का शब्द, **आवाज़ रहित धुन (Sound less sound)** है वो, क्योंकि – '**दो बिन होय न अधर अवाज़ा॥**' आवाज़ दो तत्व के टकराने के बिना नहीं होती और जहाँ आवाज़ है, वहाँ माया है।

हद टप्पे सो औलिया, बे-हद टप्पे सो पीर।
हद-बेहद दोनों टप्पे, तिसका नाम कबीर॥

कालान्तर में जितने भी रुहानियत की बात करने वाले सन्त महात्मा हुए सबने निर्विवाद रूप से उनकी बात एवं सिद्धान्त को स्वीकार किया। हर पहलू को अत्यन्त सावधानी के साथ छुआ। सहज साधन के सिद्धान्त को समाज तक पहुंचाया कि हम किस तरह गृहस्थ आश्रम में रहते हुए परमतत्व की साधना कर सकते हैं। सुषमना नाड़ी को किस तरह खोलकर ब्रह्मण्ड की यात्रा की जा सकती है। इन रहस्यों को आम आदमी की भाषा में बोला :

''खेल ब्रहमाण्ड का पिण्ड में देखिया, जगत की भर्मना दूर भागी।
बाहरा भीतरा एक आकाशवत्, सुषमना डोर तह पलट लागी॥
पवन को पलट कर शुन्य में घर किया, घर औ अघर में भरपूर देखा।
कहै कबीर गुरु पूरे की मेहर से, त्रिकुटी मध्य दीदार देखा॥
देख दीदार मस्त होय रहूं, सकल भरपूर है नूर तेरा।
सुभग दरियाव जहाँ हंस मोती चुगे, काल का जाल तहां नाहीं तेरा॥
ज्ञान का थाल औ सहज मति पथ है, धर अधर में अगम किया डेरा।
कहै कबीर तहाँ भ्रम भासै नहीं, आवागमन का मिटा फेरा॥

यह शब्द शुद्ध अध्यात्म जगत् के अन्दर ले जाते हैं यदि आप देखें तो पाएंगे ग्रन्थ साहिब में कबीर साहिब की वाणी को बहुत ही ऊंचा स्थान दिया गया है। दादू दयाल जी ने कबीर साहिब के लिए लिखा है।

केते सन्ता कूप है, केते सरिता नीर।
दादू अगम अथाह है, दरिया सत्य कबीर॥
कः कलौ केवलः सार्थो विद्वेषपरिकीतियतः।
ऋद्धि शुभसमासेन यः कबीरः स योच्चते॥

अर्थात (क) कलियुग में जीवों के साथ है। (ब) बोध रूप होकर पापों का नाश करता है (र) सबके हृदय में मिल रहा है, उसको कबीर कहते हैं।

बाजा बाजे रहित का, पड़ा नगर में शोर।
सद्‌गुरु खसम कबीर है, नजर ना आवे और॥ –धर्मदास जी

बानी अरब व खरबलों, ग्रन्थाँ कोटि हज़ार।
कर्ता पुरुष कबीर है, नाभे किया विचार॥ –सन्त नाभा जी

यक अर्ज गुफतम पेश, तू दर गोश कुन करतार।
हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदिगार॥ –गुरु नानक साहिब जी

कबीर कर्ता आप है, दूजा नाहीं कोय।
दादू पूर्ण जगत को, भक्ति दृड़ावन सोय॥
दादू नाम कबीर का, जो कोई लेवे ओट।
उसको कभी न लागसी, काल बज्र की चोट॥ –दादू दयाल जी

जैसे बादल गगन में, चलते हैं बे पाँव।
ऐसे पुरुष कबीर हैं, शुन्य में रहे समाव॥
गगन मण्डल से उतरे, साहिब पुरुष कबीर।
चोला धरा खवास (सेवक) का तोड़े यम जंजीर॥ –ग़रीब दास जी

इत्यादि सन्तों के शब्द प्रकट कर बता रहे हैं कि **कबीर साहिब मानव नहीं थे। ऐसे तो सब लोग अपने अपने इष्ट की प्रशंसा करते हैं, बड़ाई बताते हैं पर भाईयों मेरे तर्क में वज़न है, गहराई है। साफ हृदय से एवं निष्पक्ष विचार करें! कबीर साहिब जानते थे कि लोगों ने मेरे जन्म के विषय में कई भ्रांतियाँ पैदा की हुई हैं,** अन्तः चलते चलते संसार को बताकर चलते हैं कि हम क्या हैं। जैसा कि आप जानते हैं उनका अवतरण सम्वत् 1455 ज्येष्ट सुधी पूर्णिमा को हुआ। ठीक 120 वर्ष तक संसार में सत्य भक्ति का उपदेश देकर जब उन्हें वापस अपने धाम जाना था तो ऐलान किया कि मैं माघ सुधी एकादशी सम्वत् 1575 मगहर (गोरखपुर के पास) में शरीर छोड़ूँगा। उनका ऐलान सुनकर लाखों की संख्या में लोग मगहर में एकत्रित हुए, उसमें उनके प्रमुख शिष्य काशी के राजा वीरसिंह बघेल अपने दल बल के साथ आए तथा अवध के नवाब बिजली खान पठान व अनेकों शिष्यों के साथ-साथ कुछ तमाशबीन भी एकत्रित हुए। राजा-वीर सिंह ने अपने सेनापति को आदेश दिया जब कबीर साहिब अपना शरीर छोड़ें तो उनके पार्थिव शरीर को लेकर काशी चलना वहाँ मैं उनका संस्कार करके समाधि बनाऊँगा। जब यह बात बिजली खान को पता चली तो उन्होंने कहा मैं ऐसा कभी नहीं होने दूगां क्योंकि कबीर साहिब मेरे मुर्शिद हैं मैं उन्हें मुसलमान धर्म के अनुसार क्रिया करके मज़ार बनाऊँगा। दोनों ओर से तलवारें खिंच गईं।

दोनों युद्ध के लिए तैयार हो गए। इतने में एक अद्भुत प्रकाश हुआ एवं आकाशवाणी हुई, **''उठाओ पर्दा नहीं है मुर्दा, ऐ मुर्ख नादाना तुमने हमको नहीं पहचाना''**। जब चादर उठाई गई तो कमल के फूल मिले, पार्थिक शरीर नहीं। यह कार्य कबीर साहिब ने लाखों लोगों के सामने सरअंजाम दिया। हिन्दुओं ने फूल लेकर समाधि बनाई, मुसलमानों ने चादर लेकर मज़ार। यह दोनों आज भी मगहर में उस महान पुरुष की गवाही दे रहे हैं कि ओ संसार के लोगो वह मानव नहीं, स्वयं पूर्ण परम पुरुष थे। भाईयों आप मेरे तर्क पर विचार करें कि इसमें कितना सत्य एवं ज्ञान है। इससे पहले इस संसार में किसी भी काल में किसी ने अपना शरीर विदेह नहीं किया। यह अपने आप में प्रथम एवं अन्तिम कौतुक है जो साहिब ने संसार को दिखाया। उनकी वाणी हमेशा संसार को दिशा एवं सर्वशक्तिमान तक जाने का रास्ता देगी। वर्तमान परिवेष में उनके सिद्धान्त संसार को शान्ति एवं सत्य के मार्ग की ओर ले जाने को सर्वथा उपयुक्त हैं।

संतों की नजर में साहिब

वाह वाह कबीर के गुरु पूरा है, वाह वाह कबीर गुरु पूरा है।
पूरे गुरु के मैं बलि जौहों, जाका सकल जहूरा है॥
अव्वल संत कबीर हैं, दूजै रामानन्द।
तासे भक्ति प्रगट भई, सात दीप नव खण्ड॥
यक अर्ज गुफतम पेश, तू दर गोश कुन करतार।
हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवर दिगार॥

–गुरु नानक देव जी

बहुत जीव अटक रहे, बिन सतगुरु भव माहिं।
दादू नाम कबीर बिन, छूटे ऐकौ नाहिं॥
दादू बैठि जहाज पर, गये समुद्दरतीर।
जल में मच्छी जो रहैं, कहे कबीर कबीर॥
कोई सगुन में रीझ रहा, कोई निर्गुण ठहराय।
अटपट चाल कबीर की, मोसे कही न जाय॥

–दादू दयाल जी

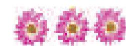
गगनमण्डल से उतरे, साहिब पुरुष कबीर।
चोला धरा खवास का, तोड़े यम जंजीर॥
दास गरीब कबीर को चेरा। सत्य लोक अमर पुर डेरा।
अमृत पान अमिय रस चोखा। पीवे हंसा नाहीं धोखा॥
अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड में, बंदी छोड़ कहाय।
सो तो पुरुष कबीर है, जननी जना न माय॥
साहिब पुरुष कबीर ने, देह धरी न कोय।
शब्द स्वरूपी रूप है, घट घट बोलै सोय॥ –गरीब दास जी

स्वामी! जौ तुम गवौ सो हौं गाऊँ, तुम्हारा ज्ञान विचारूँ।
कहैं रैदास सुणों हो स्वामी, भर्म कर्म सब छाड़ूँ॥ –रविदास जी

पानी ते पैदा नहीं, श्वासा नहीं शरीर।
अन्न अहार करता नहीं, ताको नाम कबीर॥ –नाभा दास जी

मेरे कन्त कबीर है, वर और नहिं वरिहों।
दादू तीन तिलाक है, चित और न धरिहौं॥ –दादू दयाल जी

कक्का केवल नाम है, बब्बा वरण शरीर।
रर्रा सब में रमि रहा, जिसका नाम कबीर॥
सोई ज्ञानी पुरुष है, सतगुरु सत्य कबीर।
रज वीरज पैदा नहीं, सुआसा नहीं शरीर॥



अलग अलग नामों से हर युग में आये साहिब

धर्म दास को साहिब जी समझा रहे हैं कि मैं हर युग में आकर हंसों को अपने धाम ले जाता हूँ। सतयुग का वर्णन करते हुए साहिब कह रहे हैं–

सुनु धर्मदास यह अकथ कहानी। सुर नर मुनि काहू नाहिं मानी॥
तन मन धनसो चित्त लगावे। गुरु का अंत कोई बिरला पावे।।
युगन युगन मोहि आवत भयऊ। सत्य शब्द मैं कहते रहेऊ॥
कहा कहौं कोई नाहिं मानै। जे समझै ते झगरा ठानै।।

सतयुग–सतयुग में **सत्यसुकृत नाम** से ज्ञानी पुरुष (कबीर साहिब) काल पुरुष के लोक में आए। इस युग में मनुष्य 21 हाथ ऊँचे शरीर के थे। साहिब ने चार हंसों को तारा–जिनके नाम थे, चित्ररेखा रानी, अष्टचौका (अष्टावक्र), राय हरचन्द (राजा हरीश चंद्र) और विकसी ग्वालिन। उन्होंने–आगे नौ लाख जीवों का कल्याण किया।

सतयुग चार हंस समझाये। प्रथम राय मित्र से नहिं आये॥
चित्ररेखा रानी कर नाऊ। तिन सुनि शब्द श्रवण चितलाऊ॥
राजा रानी पूछत मोही। सो हकीकत कहौं मैं तोही॥
अष्टचौका को शब्द सुनावा। राजा रानी लोक पठावा॥
दुसरे राय वटक्षेत्र के आवा। सतसुकृति तहँ नाम धरावा॥
तिन राजा पूछा चित लायी। तब तेहि भेद कह्यो समझायी॥
पान परवाना राजहिं दीन्हा। राजा वास लोक में कीन्हा॥
तिसरे राय हरचन्द कहँ आये। बन्ध काटि के लोक पठाये॥
चौथे पुरी मथुरा में आये। विकसी ग्वालिन को समझाये॥
चारि हंस सतयुग समझाये। ते चारों गुरुवंश कहाये॥
चारिहंस नौ लाख बचाये। शब्द भरोसे घरहिं पठाये॥

साहिब कह रहे हैं कि इस तरह सतयुग में आकर मैंने चार हंसों को तारा और आगे उन चारों ने नौ लाख जीवों का कल्याण किया। आगे कह रहे हैं–

त्रेतायुग–इस युग में ज्ञानी जी (कबीर साहिब) **मुनिन्द्र नाम** से आए। इस युग में मनुष्य 14 हाथ ऊँचे शरीर के थे। त्रेतायुग के हंस ऋषि शृंगी (नेम ऋषि), अयोध्य मधुकर, टकसारा, लक्ष्मण कुमारा, रावण की पत्नि मन्दोदरी, गुरु वशिष्ठ मुनि और दुर्वासा ऋषि को गुरु स्वरूप परवाना दिया।

पुनि त्रेता युग कहौं विचारी। सात हंस त्रेतायुग तारी॥
प्रथम ऋषि शृंगी समझाये। दुसरे अयोध्या मधुकर आये॥
तीसरे शब्द कह्यो टकसारा। चौथे बोधे लछन कुमारा॥
पचवें चलि रावण लगि गयऊ। तहाँ भेंट मंदोदरि से भयऊ॥
गर्वी रावण शब्द न माना। मंदोदरी शब्द पहचाना॥
छठैं चलि वसिष्ठ लगि आये। ब्रह्म निरूपन उनहिं सुनाये॥
सतये जंगल में कियो वासा। जहाँ मिले ऋषि दुर्वासा॥
सात हंस सातौ गुरु कीन्हा। परम तत्व उनही भल चीन्हा॥
सातौ गुरु त्रेता में भयऊ। देइ उपदेश सो हंस पठयऊ॥

इस तरह साहिब कह रहे हैं कि त्रेतायुग में मैंने सात हंसों को तारा, जिनमें वशिष्ठ मुनि, शृंगी ऋषि आदि भी थे। अब द्वापर युग का वर्णन करते हुए साहिब कह रहे हैं–

द्वापरयुग–इस युग में ज्ञानी पुरुष **करुणामय नाम** से साहिब आए और रानी इन्दुमती, राजा युधिष्ठिर, द्रौपदी, पराशर ऋषि, राय धुधुल, पारसदास और उनकी पत्नी, गरुड़बोध, हरिदास सुपच भक्त, शुकदेव, विदुर, राजा भोज, राजा मुचकुन्दहि, चन्द्रहास, चार ग्वाल (श्री कृष्ण) की गोपी को तारा।

त्रेता गत द्वापर युग आया। सत्रह जीव परवाना पाया॥
प्रथमें राय चंद विजय कहँ गयऊ। ताकी रानी इन्दुमति रहेऊ॥
दुसरे राय युधिष्ठिर कहँ आये। द्रौपदी सहित परवाना पाये॥
तिसरे पाराशर पहँ आये। निर्णय ज्ञान ताहि समझाये॥
चौथे राय धुधुल लहि भेदा। बहुत ज्ञान को कीन्ह निखेदा॥
पचयें पारसदास समझावा। स्त्री सहित परवाना पावा॥
छठये गरुड़बोध हम कीन्हा। विहंग शब्द गरुड़ को दीन्हा॥
सातें हरिदास सुपच समझावा। नीमषार महँ उसको पावा॥

अठयें शुकदेव पहँ ज्ञान पसारा। सकल सरब भेद निरवारा॥
नवमें राजा विदुर समझाया। भक्तिरूप उन दर्शन पाया॥
दशमें राजा भोज बुझाया। सत्य शब्द पुनि उसे चिह्नाया॥
ग्यारहें राजा मुचकुन्दहि तारे। बारहें राजा चन्द्रहास उबारे॥
तेरहे चलि वृन्दावन आये। चारि ग्वाल गोपी समझाये॥
गुरु रूप पुनि पन्थ चलाये। भौसे हंसा आनि छुड़ाये॥
बावन लाख जो जीव उबारा। कलियुग चौथे यहाँ पर धारा॥

इस तरह साहिब कह रहे हैं कि 17 जीव मैंने द्वापर में तारे। अब कलयुग का वर्णन करते हुए कह रहे हैं–

कलयुग–कलयुग में ज्ञानी पुरुष **कबीर नाम** से आए और गोरखदत्त (गोरखनाथ), गुरु रामानन्द, पीर शेख तकी, राजा सिकन्दर, राजा बीर सिंह, कनक सिंह, राव भुपाले, रतना बनिया, अलिदास धोबी, ..., हजरत मुहम्मद, नानक देव जी, साहु दमोदर को तारा और गुरु स्वरुप परवाना दिया। ऐसे 5 लाख पहिले तारे 42 लाख और जीवों को उबारा।

प्रथमें गोरखदत्त समझाये। तारक भेद हम तुमहिं बताये॥
दुसरे शाह बलख को बोधा। पढ़ै आरबी बहुविधि सोधा॥
तिसरे रामानन्द पहँ आये। गुप्त भेद हम उन्हें सुनाये॥
चौथे पीर को परचे दीन्हा। पचये शरण सिकन्दर लीन्हा॥
छठै बीरसिंह राजा भयऊ। ताको हम शब्द सुनयऊ॥
सतयें कनकसिंघ समझाये। सोलह रानी लोक पठाये॥
अठएँ राव भूपाले आये। ग्यारह रानी लोक पठाये॥
नौमें रतना बनिन समझाई। जाति अग्रवालिन करत मिठाई॥
दशएँ अलिदास धोबी गयऊ। सात जीव परवाना पयऊ॥
ग्यारहें ____________ समझायी। तिन बहु भक्ति करी चितलायी॥
बारहें मुहम्मद कह्यो कुराना। हद्द हुकुम जीव कर माना॥

तेरहें <u>नानक</u> से कह्यो उपदेशा। गुप्त भेद का कहा संदेशा॥
चौदहें <u>साहु दमोदर</u> समझावा। करामात दै जीव मुक्तावा॥
चौदह हंस कलयुग में कीन्हा। गुरु स्वरूप परवाना दीन्हा॥
पाँच लाख हम पहिले तारे। पीछे धर्मनि तुम पगुधारे॥
वंशन थाप्यों कियो कडिहारा। लाख ब्यालिस जीव उबारा॥

साहिब ने धर्मदास को कहा कि हर युग में आता हूँ और जीवों को चिताकर अमर लोक ले जाता हूँ। इस तीन लोक में काल जीवों को सता रहा है। यह देख साहिब ने मुझे भेजा।

वो कह रहे हैं कि मेरा कोई माता-पिता नहीं है, मैं अविगत से चला आया हूँ। जो मेरे नाम को पकड़ लेता है, वो काल से मुक्त हो जाता है।

कबीर साहिब खुद साहिब थे। हम उनकी वाणी को लेकर चल रहे हैं। अन्य कोई भी उनकी वाणी को पूर्ण रूप से लेने से हिचकेगा। इसके कई कारण हैं। हालांकि हमारा पंथ कबीर-पंथ नहीं है, क्योंकि साहिब ने कभी नहीं कहा कि मुझे मानना, उन्होंने सतगुरु की भक्ति करने को कहा, सतगुरु को ऊँचा स्थान दिया। पर मैं उनकी वाणी को एक सहारे के रूप में ले रहा हूँ। वो भी लेने की ज़रूरत नहीं है, पर इससे मेरी बात को गवाही मिल जाती है। बाकी महात्मा वाणी को पूर्ण रूप में लेने से इसलिए हिचक रहे हैं, क्योंकि साहिब जी पाखण्ड के ख़िलाफ़ थे और पाखण्ड के हरेक रूप पर उन्होंने चोट की है। ऐसे में बाकिओं को अपनी पोल खुलने का भय है। वे तो बस उतना ही ले रहे हैं, जितने से उनका स्वार्थ सिद्ध हो सके। उनकी वाणी को लेकर कहीं वो तीन लोक को स्थापित कर रहे हैं, कहीं उनकी वाणी को लेकर सगुण-भक्ति को स्थापित कर रहे हैं। बस इनका हाल तो उस भिखारी की तरह है जो दान माँगने के लिए उनका नाम लेकर अक्सर गाता फिरता है–

दान दिये धन न घटे, नदी न घटे नीर।
अपनी आँखों देख ले, यों कथि कहहिं कबीर॥

पर वह कभी भी यह दोहा क्यों बोलेगा–

माँगण मरण समान है, मत माँगो कोई भीख।
माँगण ते मरना भला, यह सतगुरु की सीख॥

वो तो बस साहिब के नाम की मोहर लगाकर अपना मतलब निकाल रहा है, लोगों को बुद्धू बना रहा है। वो तो साहिब ने दूसरे अर्थ से कहा है। यानी दान देने वाले की इच्छा पर है, माँगने के लिए तो कहा ही नहीं। ऐसे ही सगुण भक्ति के बारे में समझाया, पर यह तो कहा ही नहीं कि सगुण-भक्ति से कल्याण होगा। उन्होंने तो आत्मा के कल्याण के लिए सगुण और निर्गुण दोनों से परे परा-भक्ति का रहस्य दिया।



(1) साहिब को गाय जीवित करने को कहा गया

बनारस में कबीर साहिब समाज को पाखण्ड से छुड़ाकर सत्य भक्ति में लगा रहे थे। दिल्ली में सिकंदर लोधी का राज्य था। राजा जलन रोग से बहुत पीड़ित था। उसने बहुत उपचार किये, पर रोग शांत न हो सका। उधर पंडित, काजी, मुल्ला, मौलवी साहिब की बढ़ती हुई सत्य भक्ति को देख परेशान थे। उनका कारोबार समाप्त हो रहा था। घबराकर उन्होंने एक षड्यंत्र रचा और राजा से कहा कि बनारस में कोई कबीर नाम का साधु रहता है; वही आपकी जलन को समाप्त कर सकता है। यह सुनते ही राजा ने मुल्ला, मौलवियों, पीरों आदि को साथ ले बनारस चले आए। बादशाह ने कबीर साहिब को अपने पास आने का निमंत्रण दिया। पंडित, मुल्ला आदि यह सोचकर प्रसन्न हो रहे थे कि अब कबीर की ख़ैर नहीं है। कबीर तो उलटवसीया है; वो कोई उल्टी बात कर देगा और राजा उसका सिर काट देगा। पर हुआ इसके उल्ट। साहिब के दर्शन पाते ही बादशाह का जलन रोग शांत हो गया। उसने गहरे सुख की अनुभूति की। उसके दिल में साहिब के प्रति प्रेम उत्पन्न हो गया। वो साहिब का बहुत ही आदर-सत्कार करते हुए राजदरबार में ले गया और अपने सिंहासन पर बिठाकर स्वयं उनके चरणों के पास बैठ गया। यह देख काज़ी, पंडित, मौलवियों को बहुत ईर्ष्या हुई। राजा का पीर गुरु शेख तकी का हृदय तो मारे ईर्ष्या के जल गया। सबने तकी के पास जाकर कहा कि कबीर काफ़िर है; यह धर्म के ख़िलाफ़ बोलता है, किसी को नहीं मानता है। तकी राजा सिकंदर के पास उनकी फ़रियाद लेकर गया और कहा कि आप खुदाय रसूल का उल्लंघन कर पाप कमा रहे हैं। राजा सोच में पड़ गया। राजा ने साहिब के पास आकर सारा हाल बताया। राजा ने कहा कि मैं आपको खुदा का ही रूप मानता हूँ, पर इन लोगों की शंका का समाधान करो। साहिब ने उनकी शंका का समाधान करना स्वीकार कर लिया। राजदरबार लगा हुआ था। साहिब भी वहाँ पहुँचे। शेख तकी धर्म गुरु होने के साथ-साथ राजा का वज़ीर भी था। इसलिए उसकी बात कोई टाल नहीं सकता था। उसने एक गाय मंगवाकर क़त्ल करवा दी। शेख तकी ने राजा से कहा कि यदि कबीर खुदा का रूप है तो इस गाय को जीवित कर दे। राजा ने साहिब की ओर देखा और उनसे ऐसा करने की प्रार्थना की। राजा की प्रार्थना को मानते हुए साहिब ने गाय को अपनी मधुर आवाज़ में पुकारा। साहिब के मीठे शब्द सुनते ही गाय जीवित हो गयी और उठकर साहिब के चरणों को चाटने लगी। पूरा दरबार यह कौतक देख बहुत हैरान हुआ। सब साहिब की जय-जयकार करने लगे और राजा यह कौतक देख इतना प्रभावित हुआ कि वो सबके सामने साहिब के चरणों में लेट गया। यह देख सब के चेहरे मुरझा गये।

जीवित गाय देख कर सब कोई हुआ हैरान।
शर्मसार हुये पाखण्डी, बड़ी साहिब की शान॥



(2) साहिब जी को जंजीरों से बाँधकर गंगा में डुबोया गया

धर्म गुरु ने बादशाह सिकंदर व भक्तजनों की साहिब के प्रति श्रद्धा से दुखी होकर फैसला किया कि वो कबीर का अंत कर देगा। उसके मन में ईर्ष्या की आग पैदा हो रही थी। उसने मौलवियों और काज़ियों द्वारा साहिब पर समाज द्रोही होने का मुकद्दमा करवा दिया और स्वयं धर्मगुरु और राजा का प्रधानमंत्री होने के कारण खुद मुकद्दमा सुना। शेख तकी ने फैसला सुनाया कि कबीर समाजद्रोही है, धर्म के ख़िलाफ़ बात करता है, इसलिए उसे सजाए मौत दी जाए। राजा ने तकी को बहुत समझाया कि कबीर साहिब पर जुल्म मत कर; वो सच्चा फ़कीर है। राजा ने कहा कि तुमने मुझे खुद कहा था कि पीर और फ़कीर अल्लाह के रूप हैं। फिर आज तुम खुद कबीर को मारना चाहते हो।

कहे सिकंदर सुनो मेरे पीर, मृत्यु दण्ड मत देह।
कबीर अल्लाह का नूर है मेरी बात मान लेह॥
हाथ-पाँव, गले बाँध जंजीर, गंगा बीच डुबाया।
राजा परजा सब ही देखें कोई रोक न पाया॥

पीर शेख तकी ने राजा से कहा कि तुम मेरी बात मान लो, नहीं तो मैं तुम्हें शाप दे दूँगा। उसने अपना मुक्ट पृथ्वी पर पटक दिया। राजा डर गया। साहिब ने राजा से कह दिया कि शेख तकी जो करना चाहता है, उसे करने दो। आप मत रोको। बादशाह सिकंदर ने साहिब को मारने की आज्ञा नहीं दी, पर तकी से कह दिया कि आप जो करना चाहे, वो करो। शेख तकी ने सिपाहियों को आज्ञा दी कि कबीर को गंगा नदी के किनारे ले चलो। सिपाही साहिब को पकड़कर वहाँ ले गये। तब शेख तकी ने आज्ञा दी कि नाव पर कबीर को बिठाकर गंगा के बीच ले चलो और वहाँ डूबने के लिए छोड़ दो। चारों ओर पाखण्डियों का शोर मचा हुआ था कि देखो कबीर को जंजीरों से बाँधकर गंगा जी में छोड़ रहे हैं। पर साहिब तो शांत भाव से मुस्करा रहे थे। सैनिक साहिब को गंगा के बीच में डुबोकर चले गए। यह दृश्य पूरी जनता देख रही थी। राजा भी वहाँ पर मौजूद था। यह कौतक देख सब हैरान हो गए कि साहिब गंगा की लहरों में मृगशाला पर बैठे मुस्करा रहे थे। उनके सभी बंधन टूट चुके थे। जंजीरें पुष्पमालाएँ बनकर साहिब के गले में पड़ी दिख रही थीं। भक्त जन यह कौतक देख प्रसन्न होकर साहिब की जय-जयकार करने लगे और पाखण्डियों के चेहरे शर्म से झुक गये।

लहर गंगा की टूटे बंदन, बैठे मृगछाला पै कबीर।
मूर्ख दुनिया समझे जुलाहा, साहिब आया पीरों का पीर॥



(3) साहिब जी को देग़ में डालकर जलाने का प्रयास

बादशाह सिकंदर ने देखा गंगा जी में साहिब को डुबो कर मारने में शेख तकी असफल रहा तो बादशाह ने शेख तकी को कहा कि कबीर तो फकीर है और फकीर अल्लाह का नूर है। यह सुनते ही शेख तकी को क्रोध आ गया और उसको लगा कि कबीर ने कोई जादू किया है और जल को बाँध दिया जिस कारण वो डूब नहीं सका। अब मैं इसे देग़ में डालकर आँच दिलाऊँगा और कबीर की राख बना दूँगा। ऐसा करने से कबीर बच नहीं सकता। यह सोच उसने एक बड़ी देग़ मंगवाई। उसने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि कबीर को पकड़कर इस देग़ में डाल दो। सैनिकों ने आदेश का पालन करते हुए कबीर को देग़ में डाल दिया। साहिब ने कोई विरोध नहीं जताया और शांत भाव से देग़ में बैठ गए। फिर शेख तकी ने देग़ का मुँह बंद कर दिया और उसके नीचे आग लगा दी। कुछ देर बाद शेख तकी सोचने लगा कि अब कबीर जलकर मर गया होगा। इतने में बादशाह ने शेख तकी को संदेश भेजा कि तुम किसे देग़ में आँच दिला रहे हो, कबीर साहिब तो मेरे पास राजदबार में बैठे हैं! शेख तकी के दुख का कोई ठिकाना न रहा।

देग़ में डाल कबीर को, नीचे आग लगाई।
पीर बड़ा खुश हुआ, देखे सभी लुकाई॥
ले संदेशा राजा का, सैनिक भागा आई।
कबीर तो मेरे पास है, किसे आँच दिलाई॥

(4) साहिब जी को तलवार से मरवाने का प्रयास

राज गुरु पीर शेख तकी द्वारा साहिब को दी जा रही यात्नाओं से बादशाह बहुत दुखी था पर राजा का शेख तकी को रोकना कठिन था। क्योंकि वो राजा का धर्मगुरु और वज़ीर भी था। साहिब ने भी बादशाह से यह कह दिया था कि इसे अपनी इच्छा से जो चाहे करने दो, मत रोको। क्रोध से भरा शेख तकी साहिब को देग़ में डालकर न जला सका तो उसकी क्रोधाग्नि चरम सीमा तक पहुँच गयी थी। क्रोध मनुष्य को सब कुछ भुला देता है। उचित-अनुचित का उसे कोई बोद्ध नहीं रहता है। वो अपना आपा भी भूल जाता है। यही हाल तकी का भी हो गया था, क्रोध में आकर उसने अपनी तलवार उठाई और साहिब को मारने चल पढ़ा। उसके साथियों ने उसे रोकने का बड़ा प्रयास किया; कहा कि आपको यह काम शोभा नहीं देता। आप यह काम किसी ओर से करवा लें। पर वो नहीं माना और खुद ही तलवार लेकर साहिब के पास आया और उन पर अँधाधुंध वार करने लगा। शेख तकी यह देख हैरान रह गया कि उसकी तलवार साहिब का कुछ नहीं बिगाड़ पा रही थी। वो साहिब के शरीर पर बिना कोई घाव किये इस तरह आर-पार होती जा रही थी मानो वो वायु में तलवार चला रहा हो। तलवार चलाते-चलाते आख़िर में जब वो थक गया तो लज्जित होकर वहाँ से मुँह नीचा करके चला गया। साहिब का शरीर तो केवल देखने मात्र के लिए था। वास्तव में तो उनका कोई शरीर था ही नहीं वो तो शब्द स्वरूपी थे।

हाथ में ले तलवार, पीर अंधाधुंध चलाये।
हर एक वार तलवार का, आर-पार हो जाये॥
पीर थक कर हार गया, अपना मुख छुपाये।
लज्जित होकर चल दिया, साहिब रहा, मुस्काये॥



(5) साहिब जी को उबलते तेल में स्नान करने को कहा गया

सबकी जुबान पर साहिब का नाम था शेख तकी साहिब को जल्दी-से-जल्दी मिटाना चाहता था। राजदरबार लगा था। उसने एक बड़ा कड़ाहा मँगवाया और तेल से भरवा दिया। फिर कड़ाहे को भट्टी पर रखकर नीचे आग लगवा दी। जब तेल उबलने लगा तो तकी ने साहिब को कहा कि यदि आप स्वयं खुदा का नूर हैं तो इस तेल से स्नान करके दिखाएँ। तब मैं मानूँगा कि आप सच में खुदा का ही नूर हैं। साहिब बिना अटके उस उबलते तेल के कड़ाहे में उतर गये और स्नान करने लगे। ऐसा लग रहा था कि मानो वे शीतल जल से स्नान कर रहे हैं। तकी साहिब को जादूगर जानकर कहने लगा कि कबीर ने मंत्र द्वारा आग को बाँध दिया है, जिसके कारण उबलता हुआ तेल भी शीतल जल के समान हो गया है। बादशाह सिकंदर ने यह बात सुनी तो उसने सोचा कि मैं परीक्षण करके देखता हूँ। जब उसने अपनी अंगुली कड़ाहे में डाली तो ऊँगली जल गई। वह ज़ोर से चिल्लाता हुआ ज़मीन पर गिर पड़ा। उसकी अँगुली पर, माँस नहीं रह गया था। राजा को मूर्छित देख साहिब उस कड़ाहे से बाहर निकल आए और राजा की जली हुई अँगुली को अपना स्पर्श दिया। साहिब का स्पर्श पाते ही राजा की ऊँगुली पुनः पहले की तरह हो गयी और वे उठ खड़े हुए। दूसरी ओर साहिब के शरीर पर कोई निशान तक नहीं था। यह देख शेख तकी और उसके साथी पाखण्डियों को बड़ा ही दुख हुआ और वे लज्जित होकर चले गये। देखने वाले सब साहिब की जय-जयकार करने लगे। आगे के लिए बादशाह ने साहिब से दिल्ली चलने की प्रार्थना की। साहिब जी ने राजा की प्रार्थना को मान लिया। राजा और उसकी सेना साहिब जी को साथ ले दिल्ली की ओर चल पड़े।

तेल भरे कड़ाहे में, साहिब करे स्नान।
तेल ऊबाले मारदा, सब देखत हुये हैरान॥
राजे समझा तेल है ठण्डा, ऊँगुल डुबोई आन।
माँस ऊपर का जल गया, दुःख से लगा चिल्लान॥



(6) कमाल को जीवित करने के लिए साहिब जी को कहा गया

साहिब को लेकर बादशाह दिल्ली की ओर चलने लगे तो बादशाह ने शेख तकी को समझाया कि साहिब की और कसौटी मत लो। पर शेख तकी कहाँ मानने वाला था। जाते-जाते रास्ते में एक जगह इलाहाबाद में त्रिवेणी के तट पर सब रुक गए। सबने वहाँ स्नान किया और भोजन किया। अब साहिब अपने प्रवचनों से सबको आनन्दित करने लगे। उसी समय संयोग से वहाँ गंगा में बहती हुई एक लाश दिखाई दी।

राजा कहे सुन तकी पीरा, छोड़ गुस्सा अभिमान।
कबीर आप रसूल है, मत करो अपमान॥

ईर्ष्या से भरे शेख तकी ने सोचा कि क्यों न अब साहिब को सबके सामने नीचा दिखाऊँ। तकी ने फौरन राजा से कहा कि यदि कबीर सचमुच खुदा है तो वो इस बहते हुए मुर्दे को जीवित कर दे। तब मैं समझूँगा कि कबीर साक्षात खुदा है। साहिब ने बादशाह से कहा कि आपके यहाँ अनेक पीर, मुल्ला, आदि इस सभा में विराजमान हैं। उन्हें आज्ञा दीजिए कि वे कलमा पढ़कर इस मृतक को जीवित कर दें। राजा के कहने पर सब मिलकर कलमा पढ़ने लगे। सभी मृतक को अपनी ओर बुलाने लगे। पर जब उन्हें इसमें सफलता नहीं मिली तो सबका मुँह लज्जा से नीचा हो गया। अंत में राजा ने साहिब से बिनती की कि आप ही इस मृतक को अपनी ओर बुलाकर पुन: जीवित करने की कृपा करें। राजा की बिनती स्वीकार कर साहिब ने हाथ ऊपर उठाकर शव को मानो इशारा किया। शव साहिब का इशारा पाते ही किनारे पर आ गया। सबने शव को देखा। वो अत्यंत ही गला-सड़ा हुआ किसी बच्चे का शव था। साहिब ने शव की ओर देख कहा-"उठ, कुदरत के कमाल से"। वो शव उसी समय उठकर खड़ा हो गया। उसमें प्राणों का संचार हो गया और वो जीवित हो गया। गंगा नदी से बाहर आकर साहिब के चरणों से लिप्ट गया। यह देख सब हैरान थे। शेख तकी और उसके साथियों के मन ईर्ष्या से जल उठे। राजा के मुँह से निकला-वाह! आपने तो कमाल ही कर दिया। साहिब ने कहा कि जाओ, आज से इसका नाम 'कमाल' ही होगा।



(7) साहिब जी को मदमस्त हाथी द्वारा मरवाने का प्रयास

शेख तकी क्रोध से भरा हुआ साहिब को मारने की योजना पर योजना बना रहा था। शेख तकी ने योजना बनाई कि कबीर को हाथी के पैरों तले कुचलवा देता हूँ। शेख तकी ने महावत से एक विशाल हाथी मंगवाया और महावत को समझा दिया कि हाथी को शराब पिलाकर मदमस्त कर कबीर को कुचलना है। उसने महावत को इस काम के लिए ईनाम का लालच भी दिया। महावत इस काम के लिए तैयार हो गया। उधर साहिब जी को शेख तकी ने सैनिकों द्वारा बँधवा दिया ताकि वे कहीं भाग भी न सकें ।फिर महावत को आदेश दिया कि हाथी को कबीर के ऊपर चढ़ाओ और कुचल डालो। जैसे ही महावत हाथी को लेकर कबीर साहिब के पास पहुँचा, हाथी उल्टे पाँव भागने लगा। महावत ने बहुत प्रयास किया, पर हाथी मानता ही नहीं था। वो डरकर भाग खड़ा हुआ। रहस्य यह था कि हाथी को कबीर साहिब के दोनों ओर शेर दिखाई पड़े, जिससे वो डरकर भाग गया। महावत इस रहस्य को समझ नहीं पा रहा था कि हाथी पीछे क्यों भाग रहा है। शेख तकी का साहिब को मारने का यह प्रयास भी विफल हो गया और उसे हार से लज्जित होना पड़ा।

साहिब को मरवाने हेतू, मदमस्त हाथी ले आये।
महावत आगे को करे, वो पीछे हट जाए॥
डर से पीछे हट रहा, महावत रहा घबरायो।
भागा जंगल की तरफ, किसे मिला न आये॥



(8) साहिब जी को बन्दूक से मरवाया जाना

पीर शेख तकी को उसके साथियों ने सलाह दी कि कबीर को किसी बंदूकधारी से मरवा देना ही ठीक रहेगा। शेख तकी ने उनकी सलाह को मान लिया और अपने सिपाहियों को भेजकर किसी कुशल निशानेबाज को लाने के लिए कहा जिसका निशाना चूके नहीं। सिपाही तकी की आज्ञा का पालन करते हुए एक बंदूकधारी को ले आए, जो बंदूक चलाने में बड़ा ही माहर था, जिसका निशाना बड़ा ही अचूक था। बंदूकधारी को शेख तकी ने समझा दिया कि उसे कबीर पर बंदूक से गोलियों की बौछार करनी है ताकि कबीर का नामोनिशान मिट जाए। उसने बंदूकधारी से कहा कि यदि तुम इस काम में सफल हुए तो तुम्हें मुँह माँगा ईनाम दिया जायेगा। बंदूकधारी मान गया। मौका आने पर शेख तकी का इशारा पाते ही बंदूकधारी ने साहिब पर उसी समय अंधा-धुंध गोलियों की बौछार शुरू कर दी, जब साहिब प्रवचन कर रहे थे। पर बंदूकधारी की गोलियाँ साहिब के चरणों का स्पर्श पाकर बंदूकधारी के पास वापिस आ रही थीं। यह देख बंदूकधारी बहुत लज्जित हुआ और वहाँ से भाग खड़ा हुआ। पूरी संगत साहिब की जय-जयकार करने लगी।

सत्संग करते साहिब पर हुई गोलियों की बौछार।
गोली चरण स्पर्श कर, वापस हुई बारम्बार॥



(9) सोते हुए साहिब जी को तलवारों से मरवाया जाना

शेख तकी और उनके साथियों में क्रोध की आग दिनों–दिन बढ़ती जा रही थी। उसकी कोई भी तरकीब कामयाब नहीं हो रही थी। उसने सोचा कि शायद कबीर कोई जादू जानता है, इसलिए मेरी कोई भी तरकीब कामयाब नहीं हो रही है। तो उसने अब की बार एक नयी तरकीब साहिब को रास्ते से हटाने की बनाई और सोचा कि मैं कबीर को सोते हुए ही मरवा दूँ ताकि उसे कोई जादू करने का मौका भी न मिल सके। यह सोच उसने उसी रात अपने जल्लादों को बुलवाकर हुक्म दिया कि कबीर को सुप्त अवस्था में क़त्ल करना है। उसके शरीर के इतने टुकड़े करो कि कोई भी जादू उसे बचा न सके। जल्लाद उस स्थान पर पहुँचे जहाँ साहिब सो रहे थे। जल्लादों ने मिलकर साहिब के गले पर अपनी तलवारों से बहुत प्रहार किये, पर साहिब का कुछ भी नहीं बिगाड़ पाए। वो नहीं जानते थे कि साहिब का तो शरीर ही नहीं है; शरीर तो केवल संसार के लोगों के देखने मात्र के लिए ही धारण किया है। तलवार चलाते–चलाते जल्लादों ने सोचा कि साहिब को तलवार से काटना तो हवा को काटना ही है, इसलिये जल्लाद लज्जित होकर वापस चले गए।

सोय पड़े कबीर पर, जल्लादों चलाई तलवार।
शब्द स्वरूपी देही पर, पड़ा न कोई घाव॥
साहिब पुरुष कबीर ने, देह धरी न कोय।
घट घट में जो रम रहा, शब्द स्वरुपी सोय॥



(10) साहिब जी को कुँए में डालकर मरवाया जाना

साहिब को साथ ले, बादशाह सिकंदर अपने सैनिकों के साथ दिल्ली वापिस आ गये। ऐसे में धर्म गुरु पीर शेख तकी की ईर्ष्या भी बहुत बढ़ गयी थी। उसने फिर साहिब को मारने के लिए खाली कूँए में साहिब को दबा देने का षड्यंत्र रचा। शेख तकी ने साहिब को एक कुँए के पास ले जाकर कहा कि आप इस कुँए में प्रवेश करें, हम आपकी प्रभुताई देखना चाहते हैं। साहिब ने उसकी बात को स्वीकार करते हुए कुँए में बिना किसी झिझक के प्रवेश कर लिया। शेख तकी ने अपने षड्यंत्र अनुसार मजदूरों को तुरंत पत्थर, मिट्टी आदि के द्वारा कुँआ भर देने का हुकम दिया। देखते-ही-देखते कुँआ पूरा मिट्टी से भर गया। अब शेख तकी की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। वो सोचने लगा कि अब साहिब से सदा के लिए छुटकारा मिल गया। इतने में बादशाह का एक सिपाही राजदरबार से वहाँ आया और शेख तकी को सूचना दी कि साहिब तो बादशाह के पास बैठे हैं और जनता को सत्य भक्ति का उपदेश दे रहे हैं। यह सुनकर शेख तकी को विश्वास नहीं हुआ और वो वहाँ पर देखने आ गया। साहिब को राजा के साथ देख शेख तकी शर्मिंदा होकर वहाँ से चला गया और साहिब को मारने का नया षड्यंत्र रचने लगा।

धर्म गुरु की इच्छा पर, कुँए में उतरे कबीर।
मिट्टी से कुँआ भर दिया, खुश हुआ तकी वजीर॥
राजे संदेशा भेजिया, मेरे पास फकीर कबीर॥



(11) साहिब जी को मुगदर द्वारा मरवाया जाना

दिनों-दिन साहिब की बढ़ती हुई उपमा से परेशान क्रोध की आग में जलते हुए शेख तकी अपने साथी पंडित, मुल्लाओं सहित कहीं जा रहा था तो रास्ते में पहलवानों का अखाड़ा दिखाई दिया। वहाँ पर उसने बड़े-बड़े पहलवानों को भारी-भारी मुगदर घुमाते देखा। उसने विचार किया कि क्यों न कबीर को इन पहलवानों के मुगदरों से मरवाया जाए। यह सोचते-सोचते शेख तकी ने अपने बाकी साथियों से भी परामर्श किया। सबने इस युक्ति की सराहना की। अपने सिपाहियों को भेज तकी ने उस अखाड़े से दो बड़े पहलवानों को बुलवाया। जब वे शेख तकी के पास पहुँचे तो शेख तकी ने उन्हें उनका काम समझाया कि कैसे साहिब को जान से मारना है। पहलवानों को मूँह माँगा ईमान देने की बात भी कही। पहलवानों ने भी उसकी बात को मंजूर कर लिया। उचित समय पाकर तकी उन पहलवानों के साथ उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ साहिब विराजमान होकर संगत को सत्य भक्ति का संदेश दे रहे थे। शेख तकी का हुक्म पाकर पहलवानों ने मुगदरों से साहिब पर प्रहार करने शुरू कर दिये। पर साहिब पर तो मानों फूलों की बारिश हो रही थी। आख़िर पहलवान प्रहार करते-करते थक गये और हार मानकर वहाँ से भाग गये। यह देख शेख तकी मन-ही-मन बहुत लज्जित हुआ। चारों ओर साहिब की जय-जयकार के जैकारे गूँजने लगे।

सत्संग देते साहिब पर, मुगदर से किये वार।
मुगदर चलाते पहलवां, थक कर गए हार॥
कुछ न बिगड़ा साहिब का, सब करते जय-जयकार॥



(12) साहिब जी को ज़हरीले बिच्छुओं के डंक से मरवाया जाना

पीर शेख तकी को एक दिन एक काज़ी ने सलाह दी कि बहुत सारे ज़हरीले बिच्छुओं को इकट्ठा करके एक साथ कबीर पर छोड़ा जाए। बिच्छुओं के काटने से कबीर की मृत्यु हो जायेगी। शेख तकी को यह बात अच्छी लगी और उसने सोचा इस बार कबीर से छुटकारा मिल जायेगा और बार-बार लज्जित नहीं होना पड़ेगा। सिपाहियों को पहाड़ पर से ज़हरीले बिच्छुओं को पकड़कर लाने का आदेश दिया गया। सिपाहियों ने पहाड़ी पर जाकर कड़ी मेहनत से बहुत सारे बिच्छू इकट्ठा किये और टोकरी में भरकर ले आए। जब बादशाह का दरबार लगा था और साहिब सत्संग की अमृत गंगा बहा रहे थे, तब शेख तकी का आदेश हुआ कि उन बिच्छुओं की टोकरी को साहिब पर डाल दिया जाये। सिपाहियों ने तुरन्त आदेश का पालन करते हुए बिच्छुओं से भरी टोकरी को साहिब पर उलटा कर दिया। पर एक कौतक हुआ कि एक भी बिच्छू साहिब को छू तक नहीं पाया और साहिब तक पहुँचने से पहले ही सब बिच्छू आसमान की तरफ हवा में विलीन हो गये। यह कौतक देख सब भक्तजन साहिब की जय-जयकार करने लगे। दूसरी ओर पाखण्डियों के चेहरे मुरझा गये और मारे लज्जा के वे मुँह नीचा कर चले गए।

जहरीले बिच्छू भर टोकरी, जंगल से ले आए।
भरी टोकरी बिच्छूओं वाली, साहिब पर उलटाएँ॥
साहिब को तो छू न सके, हवा विलीन हो जाये॥



(13) साहिब जी को भाले से मरवाया जाना

क्रोध से भरे शेख तकी ने साहिब की कसनियाँ लेते-लेते एक बार मन में विचार किया कि क्यों न कबीर को भाले से मरवा दिया जाए। यह युक्ति उसके पाखण्डी साथी पंडित, मुल्ला और मौलवी आदि सबको अच्छी लगी। इस युक्ति को सबने सराहा। उन्होंने सोचा कि कबीर अब कोई जादू भी नहीं कर पायेगा। शेख तकी ने फौरन कुशल भाला चलाने वाले को बुलवाया और उसे उसका काम बताकर कह दिया कि यदि वो कबीर को भाले से मार देगा तो उसे बहुत सारा मूँह मांगा ईनाम भी दिया जायेगा। भाला चलाने वाले ने मंजूर कर लिया। षडयंत्र के अनुसार उचित समय में शेख तकी ने भाला चलाने वाले को इशारा किया। इशारा पाकर भाले वाले ने साहिब पर अपने भाले के बड़े प्रहार किये। पर साहिब पर उनका कोई असर न देख वह बड़ा लज्जित हुआ और जब भाला स्वयं उसी को चोट पहुँचाने लगा तो भाला चलाने वाला वहाँ से भाग गया। यह देख शेख तकी भी मारे लज्जा के वहाँ से चला गया। तकी साहिब को समझने में बड़ी भूलकर रहा था।

पा ईशारा शेख तकी का, भाले से किया वार।
साहिब पर कोई असर न होये, किये बड़े प्रहार॥
जीव चितावन साहिब आए, कोई न माने बात।
कसनी लेने से न डरता, मूड़ यह संसार॥



(14) साहिब जी को जिंदा जलाने की अग्नि परीक्षा ली गयी

हर मुख से साहिब की प्रशंसा सुन-सुन शेख तकी ईर्ष्या की आग में जल रहा था। एक दिन उसने साहिब को जिंदा जलाने का षययंत्र रचा। उसने षडयंत्र के अनुसार एक स्थान पर सूखी लकड़ियों का ढेर लगवा दिया। वहाँ काफी लोग इकट्ठा होना शुरु हो गए। शेख तकी साहिब को अपने साथ लेकर उस स्थान पर आया। शेख तकी ने साहिब को उन लकड़ियों के ढेर के ऊपर बैठने को कहा। साहिब बड़ी ही निडरता से लकड़ियों के ढेर के ऊपर बैठ गये। तब शेख तकी ने अपने सिपाहियों को आज्ञा दी कि लकड़ियों के नीचे आग लगा दो। ढेर के हर तरफ आग लगा दी गयी। आग ने सारी लकड़ियों को जलाकर राख कर डाला, पर साहिब तो शांत होकर बैठे रहे। जब धुँआ उठने लगा और कुछ दिखाई देना संभव न रहा तो शेख तकी को शंका हुई कि कहीं साहिब जादू से राजदरबार में तो नहीं पहुँच गये हैं। उसने अपने एक सिपाही को वहाँ भेजा। सिपाही ने आकर सूचना दी कि वे तो बादशाह सिकंदर के दरबार में सत्य भक्ति का उपदेश दे रहे हैं। यह सुनते ही शेख तकी बड़ा क्रोधित हुआ। उसकी ईर्ष्या और बढ़ गयी। वो तेजी से राजदरबार में आया। साहिब को देख कर बड़ा लज्जित हुआ और वहां से चला गया।

जिंदा पीर कबीर को, चिता पै दिया बिठा।
हुया ईशारा धर्म गुरु का, दी नीचे आग लगा॥
आग की लपटें उठ रही, देखे सारा जहाँ।
साहिब ज्ञानी पुरुष को, आग न सकी जला॥



(15) साहिब जी को पत्थर बाँधकर ऊँचे पहाड़ से मारने के लिए नीचे गिराया जाना

चारों तरफ साहिब की जय-जयकार हो रही थी। साहिब को मारने में विफल हो रहे पाखण्डियों की नींद उड़ गई थी। ईर्ष्या पीड़ित शेख तकी ने एक दिन फिर साहिब को मारने का षडयंत्र रचा। साहिब को घूमने के बहाने वह ऊँचे पहाड़ पर ले गया। वहाँ पहुँचकर उसने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि कबीर के शरीर पर एक भारी पत्थर बाँध दो और इसे पहाड़ी से नीचे फेंक दो। सैनिकों ने आज्ञा का पालन किया और साहिब के शरीर पर एक बहुत वज़नदार पत्थर बाँधकर पहाड़ी से नीचे गिरा दिया। जिस भारी पत्थर से साहिब को बाँधा था वो तो बीच में गायब हो गया। जब साहिब पहाड़ी के नीचे पहुँचे तो पहले ही पुष्पों का बहुत बड़ा बिछौना साहिब के लिए बिछ गया। साहिब उस पर ऐसे विराजमान हो गये जैसे कोई बात ही नहीं हुई हो। जो पत्थर सैनिकों ने बाँधा था, उसके गायब होने का किसी को पता भी नहीं चल पाया। शेख ने सोचा कि कबीर का अंत हो गया होगा। पर जब अगले दिन शेख तकी राजदरबार गया तो साहिब को राजदरबार में प्रवचन करते पाया तो उसकी लज्जा का अंत न रहा। उसकी ईर्ष्या की आग और बढ़ गई।

ऊँचे पर्वत भारी पत्थर, रस्सी से बाँधा कबीर।
चोटी से नीचे गिराया, सब पीरों का पीर॥
पत्थर फूलों की सेज बना, ऐसा खेल रचाया।
सतलोक के साहिब वासी, वहाँ काया न माया॥



(16) भूखे शेर को साहिब जी पर छोड़ा गया

नये–नये षड्यंत्र रचते–रचते एक समय शेख तकी के पाखण्डी साथियों ने उसे सलाह दी कि क्यों न इस बार कबीर के ऊपर भूखा शेर छोड़ा जाएँ। भूखा शेर झट से हमला करेगा और भूख का मारा कबीर को खा जायेगा। धर्म गुरु शेख तकी को सलाह बहुत पसंद आई। उसने एक पिंजरे में बंद शेर को मँगवाया और उसे कुछ दिनों तक भूखा रखा। फिर एक दिन समय पाकर उस पिंजरे को अपने सैनिकों की सहायता से उस स्थान पर ले गया, जहाँ पर बैठकर साहिब सत्य भक्ति का उपदेश दे रहे थे। शेख तकी ने साहिब के सामने पिंजरे का मुँह खोला। उसने सोचा कि भूखा शेर सीधा साहिब पर ही हमला कर साहिब को खा जाएगा लेकिन आश्चर्यजनक बात हुई। शेर ने पिंजरे से बाहर निकलकर साहिब के चरणों को स्पर्श किया और वापिस पिंजरे में चला गया। यह देख शेख तकी और उसके पाखण्डी साथी बड़े लज्जित और दुखी हुए और मुँह नीचा करके वहाँ से चले गये। सत्संग सुन रहे श्रद्धालुओं द्वारा साहिब की जय–जयकार से आकाश गूंजने लगा। चारों तरफ साहिब की सत्य भक्ति का गुणगान हो रहा था। साहिब के दर्शन के लिए लोग दूर–दूर से आ रहे थे।

कई दिनों का भूखा शेर, साहिब ऊपर छोड़ा।
चरण स्पर्श पा साहिब का, पिंजरे ओर मुख मोड़ा॥
लज्जित होकर मुँह छुपा के, पीर वहाँ से दौड़ा॥



(17) साहिब जी को अष्ट धातु की गदा से मरवाया जाना

साहिब की बढ़ती हुई सत्य भक्ति से परेशान पीर शेख तकी को कुछ भी नहीं सूझ रहा था कि साहिब को कैसे मरवाया जाए। एक दिन उसके सहयोगियों ने सलाह दी कि क्यों न अष्ट धातु की गदा बनवाई जाए और उसका प्रहार कबीर पर करवाया जाए। अष्ट धातु की बनी गदा के प्रहार से कोई भी जीवित नहीं बच सकता। शेख तकी को योजना बहुत पसंद आई। उसने उसी समय ऐसी कई गदा बनवाने का आदेश दिया।

बढ़ती महिमा देख साहिब की, सूझा एक उपाय।
अष्ट धातू की गदा बनाकर, साहिब को मरवायें॥

कुछ ही दिनों में कारीगरों ने अष्ट धातु की गदाएँ तैयार कर दीं। अब उन्हें चलाने वाले चाहिए थे। शेख तकी ने गदा चलाने वाले कुशल पहलवानों को बुलवाया और उन्हें उनका काम समझा कर मूँह मांगा ईनाम देने की बात भी कही। अवसर पाते ही तकी के आदेशानुसार पहलवानों ने गदाएँ अपने-अपने हाथ में लेकर साहिब पर प्रहार करने शुरू कर दिये। प्रहार करते-करते पहलवान तो थक गये और हार मान कर भाग गये, पर साहिब का कुछ नहीं बिगड़ा। यह देख शेख तकी और उसके पाखण्डी साथी बड़े दुखी और लज्जित होकर चले गए।

सबने मिलके साहिब के, शीश पे गदा चलाई।
गदा चलाकर थके पहलवां, साहिब को आँच न आई॥



(18) ज़हरीले नाग के डंक से साहिब जी को मरवाया जाना

बार-बार मारने के प्रयास करता शेख तकी साहिब का कुछ नहीं बिगाड़ पा रहा था। इस बात से उसकी ईर्ष्या भी बहुत बढ़ गयी थी। एक दिन वो कहीं जा रहा था कि रास्ते में उसे एक सपेरा मिला। सपेरा अपने द्वारा पकड़े हुए साँप लोगों को दिखा रहा था। शेख तकी के मन में एक युक्ति आई और उसने सपेरे को अपने पास बुलाया और कहा ज़हरीले साँप के डंक से कबीर को मारना है। यदि तुम इस काम में कामयाब हो जाओगे तो तुम्हें बहुत सारा ईनाम भी मिलेगा। ईनाम के लालच से सपेरा बड़ा खुश हुआ और जंगल में चला गया। जंगल में बीन बजाते-बजाते सपेरे के जाल में एक ज़हरीला नाग आ गया। उसने उसे पकड़कर पिटारी में बंद कर लिया और शेख तकी के पास लाया। शेख तकी ने सपेरे से कहा कि जब मैं इशारा करूँ, तभी तुम इस ज़हरीले नाग को कबीर के गले में डाल देना। राजा सिकंदर का दरबार लगा हुआ था। तब साहिब सबको उपदेश दे रहे थे। ऐसे समय में शेख तकी ने उस सपेरे को आज्ञा दी। शेख तकी की आज्ञा पाते ही सपेरे ने उस ज़हरीले नाग को साहिब के गले में डाल दिया। तकी साहिब के अंत का इंतज़ार कर रहा था पर हुआ बिलकुल उल्टा। साहिब के गले में पड़ा नाग पुष्पमाला बन गया। यह घटना देख सब साहिब की जय-जयकार करने लगे और पीर शेख तकी लज्जित होकर वहाँ से चला गया।

तकी सोचे कबीर जुलाहा, पड़ा अकल को ताला।
विषधारी फनीयर साँप ले, साहिब ऊपर डाला॥
गले पड़ा फनीयर विषधर, बना फूलों की माला॥



(19) साहिब जी को विष वाले त्रिशूल से मरवाया जाना

क्रोध अथवा ईर्ष्या की आग से जलते हुए एक समय शेख तकी ने विचार किया कि क्यों न कबीर को विष वाले त्रिशूल से मरवा दिया जाए। उसके साथी पंडित, मुल्ला, मौलवी आदि को भी यह योजना बहुत अच्छी लगी। बस, फिर क्या था! तकी ने एक त्रिशूल मँगवाया और उसे विष में बुझाया। उसके बाद एक त्रिशूल चलाने वाले को बुलाकर अच्छी तरह से उसका काम समझाया कि उसे क्या करना है।

मुल्ला मौलवी धर्म गुरु, मिल तरकीब एक बनाई।
करो खातमा पीर कबीर का, त्रिशूल से दियो मरवाई॥

जब साहिब सत्य भक्ति की अमृत वर्षा से भक्तों को प्रसन्न कर रहे थे, तो वहीं उस व्यक्ति ने आकर तकी के इशारे से साहिब पर त्रिशूल के अनेक प्रहार किये। पर त्रिशूल तो साहिब के शरीर तक पहुँच ही नहीं पा रहा था। साहिब तो स्वयं सतपुरुष थे। शरीर तो उन्होंने केवल दुनिया को दिखाने मात्र ही धारण किया था। अगर उनका शरीर मायावी होता तो त्रिशुल चलाने वाले का कोई प्रहार खाली न जाता। इसलिए त्रिशूल चलाने वाला थक-हार गया तो उसने वहाँ से भाग लेना ही उचित समझा। यह देख भक्तजन साहिब की जय-जयकार करने लगे और शेख तकी को फिर लज्जित होना पड़ा और वह शर्मसार होकर वहाँ से चला गया।

साहिब तक न पहुँच सका, कोई त्रिशूल का वार।
यह देख हैरान भक्तजन, करते जय-जयकार॥



(20) दूध में काँच मिलाकर साहिब जी को पिलाया जाना

दूर-दूर तक साहिब की ख्याति दिनों-दिन बढ़ती जा रही थी। साहिब की जय-जयकार के जैकारे सुनते-सुनते शेख तकी की क्रोध अग्नि चरम सीमा तक पहुँच गई थी। एक समय शेख तकी ने साहिब से हमेशा के लिए छुटकारा पाने के लिए किसी विश्वसनीय सहयोगी की सलाह ली। दोनों ने मिल कर एक नया षड्यंत्र रचा कि साहिब को दूध में काँच डालकर पिलाया जाये तो साहिब जीवित नहीं बच पाएगा। शेख तकी ने सोचा कि इससे बादशाह की दृष्टि में भी कबीर नीचा हो जायेगा। यह सोच उसने काँच मँगवाया और उसे बहुत बारीक पीसकर दूध में मिला दिया। काँच मिले हुए दूध को शेख तकी ने कबीर साहिब को पीने के लिए दिया। अंतर्यामी साहिब सब जानते थे। उन्होंने काँच मिले हुए दूध को अपने हाथों में लिया। ऐसे में एक हैरान कर देने वाली घटना हुई। उस दूध से मनुष्य निकल-निकल कर साहिब के चरणों में बन्दना करने लगे। यह देख सब आगे बैठे भक्तजन साहिब की जय-जयकार करने लगे और शेख तकी मारे लज्जा के वहाँ से अपना मुख छुपा कर चला गया।

शेख तकी ने काँच मिला दूध, साहिब को पकड़ाया।
भरे गिलास से मनुष्य निकल कर, चरनी शीष झुकाया॥
मारे लज्जा के कोई पाखण्डी, पल भर रुक न पाया।
जय-जयकार हुई जगत में, अमरलोक का साहिब आया॥



(21) साहिब जी को तोप से मरवाने का प्रयास

भोले-भाले लोगों को भरम में डाल समाज को लूट-लूट कर खाने वालों की गिनती बढ़ती जा रही थी। धार्मिक पाखण्डियों के पाखण्डवाद को छोड़ कर आम लोग साहिब की सत्य भक्ति को अपना रहे थे। इसलिए साहिब को अपने रास्ते से हटाने के लिए पाखण्डी रोज-रोज नये-नये षंड्यत्र रचते जा रहे थे। शेख तकी जितनी साहिब की कसौटियाँ लेता था, उतनी ही साहिब की ख्याति बढ़ती जा रही थी। भक्त लोग पाखण्ड से छूटकर साहिब की शरण में तेजी से आने लगे। ऐसे में एक दिन शेख तकी ने षड्यंत्र रचा कि साहिब को तोप से उड़ा देता हूँ। उसने अपने तोपची से कहा कि तुम तोप में गोला बारूद अच्छी तरह से भरो। तोपची ने आदेश का पालन करते हुए तोप में गोला बारूद भर दिया। अब शेख तकी ने साहिब से कहा कि आप इस तोप के सामने खड़े हो जाओ। साहिब बिना किसी झिझक के तोप के सामने खड़े हो गये। तकी ने फौरन अपने तोपची को तोप चलाने का हुक्म दिया। तोपची तोप चलाता था पर तोप से कुछ नहीं निकलता था क्योंकि तोप में भरे गोला बारुद ने पानी का रूप धारण कर लिया था। इसलिए तोप में भरा पानी आग नहीं पकड़ रहा था। साहिब तोप के सामने खड़े-खड़े मुस्करा रहे थे। अब तकी कुछ-कुछ समझने लगा था कि साहिब साधारण नहीं हैं, फिर भी साहिब की कसनी लेने से नहीं चूकता था।

तोप से उड़ाएँ साहिब को, पीर ने ऐसी युक्ति बनाई।
खड़ा किया तोप के आगे, गोला बारुद को आग लगाई॥
गोला बारुद पानी बन गया, ऐसी साहिब खेल रचाई।
शब्द स्वरूपी देह साहिब की, झूठी दुनिया समझ न पाई॥



(22) साहिब जी को मरवाने के लिए जादू की पुड़िया खिलाई गई

जब राज गुरु शेख तकी के साहिब को मारने के सारे प्रयास विफल होने लगे तो उसे लगा कि शायद कबीर कोई बहुत बड़ा जादूगर है जो अब तक मारा नहीं गया। उसने सोचा कि कोई जादूगर ही जादूगर कबीर को मारने का सही तरीका बता सकेगा। यह सोच कर उसने साथियों को बुलाया और साहिब को मारने के नये षड्यंत्र के बारे में बताया। सबको यह बात अच्छी लगी। शेख तकी ने अपने सिपाहियों को किसी प्रसिद्ध जादूगर को खोज लाने की बात कही। सिपाहियों को एक ऐसा प्रसिद्ध जादूगर मिल गया। शेख तकी अपने साथियों सहित उस जादूगर के पास गया और कबीर को एक जादूगर बताते हुए कहा कि उसे मार कर पीछा छुड़ाने का कोई उपाय बताओ। जादूगर ने उसकी समस्या को सुनकर उसे एक जादू की पुड़िया दी और उसके प्रयोग की विधि भी बताई। शेख तकी बड़ा खुश हुआ, सोचा कि अब साहिब से छुटकारा मिल जायेगा। अब ठीक समय पाकर जादूगर द्वारा बताई गई विधि के अनुसार शेख तकी ने उस पुड़िया का प्रयोग साहिब पर कर दिया। लेकिन हुआ तो बिलकुल ही उल्टा। साहिब का तो कुछ भी नहीं बिगड़ा बल्कि शेख तकी को ही उस पुड़िया द्वारा कष्ट उठाना पढ़ा।

तंत्र मंत्र सब झूठ है, मत भरमो कोय।
सार नाम पाय बिना, कागा हंस न होय॥
डांकिनी शाकिनी बहु किलकारें, जम किंकर धर्मदूत हंकारे।
सत्य नाम सुन भागे सारे, जब सतगुरु नाम उचारा है॥



(23) बाँस की फूँकनी के प्रहार से साहिब जी को मरवाया जाना

साहिब की सत्य भक्ति पूरे देश में बहुत तेज़ी से फैल रही थी। पाखण्डियों के चुंगल से निकल कर लोग साहिब की सत्य भक्ति को अपना रहे थे। साहिब की बढ़ती हुई शान देख शेख तकी की चिन्ता बढ़ रही थी। इसलिए वो तलाश में रहता कि कैसे साहिब को रास्ते से हटाया जाये। अपने साथी पंडित, मुल्ला और मौलवियों से मिलकर नये-नये षड्यंत्र साहिब को मारने के लिए रचता रहता। एक दिन उसने नगर में बाँस की भारी फूँकनी देखी तो उसके मन में विचार आया कि क्यों न साहिब के सिर पर इस फूँकनी से प्रहार कर साहिब की जीवन लीला को समाप्त किया जाए। यह सोच कर उसने अपने सिपाहियों को भेजकर वो बाँस की फूँकनी मँगवाई और उसने स्वयं ही बाँस की फूँकनी से प्रहार करने का फैसला कर लिया। समय आने पर उसने उस भारी बाँस की फूँकनी से साहिब के सिर पर प्रहार किया। पर साहिब के सिर पर उसका कोई भी असर न हुआ। साहिब के सिर पर बार-बार प्रहार करने से बाँस की फूँकनी का असर न होते देख शेख तकी अत्यंत लज्जित हुआ और शीघ्र ही वहाँ से चल दिया।

देख बाँस की फूँकनी, तकी ने किया विचार।
जिसके सिर पै लगेगी, वोह सह सके न मार॥
अपने हाथों साहिब पर, बहुत किये प्रहार।
बाल बाँका न कर सका, थक कर गया हार॥



(24) विलक्षण नाग को साहिब जी पर छोड़ा गया

साहिब को रास्ते से हटाने के सारे प्रयास फेल हो रहे थे। हर बार शेख तकी को लज्जित ही होना पढ़ता। पर वो साहिब को जादूगर समझकर नये-नये षड्यंत्र रचने लगता था। कहीं से भी साहिब को मारने की कोई भी सलाह उसे देता तो वो फौरन मान लेता था। क्योंकि उसका एक ही लक्ष्य था कि किसी भी तरह से साहिब को हमेशा-हमेशा के लिए मिटा देना। शेख तकी के एक सूझवान साथी ने एक ऐसे विलक्षण नाग के बारे में बताया जिसके डंसते ही मनुष्य मर जाता है। शेख तकी ने फौरन उस नाग को मँगवाने का आदेश दे दिया। विलक्षण नाग आ गया। एक दिन जब बादशाह सिकंदर का राजदरबार लगा था और साहिब मध्य में आसन पर विराजमान होकर सत्य भक्ति का उपदेश दे रहे थे, शेख तकी ने ऐसे समय विलक्षण नाग की पटारी अपने हाथ में लेकर साहिब पर उस नाग को छोड़ा। शेख तकी साहिब की छवि को सबके सामने बिगाड़ने के चक्कर में था, पर उसे क्या पता था कि वो अपनी इन करतूतों से साहिब को अधिक-से-अधिक प्रसिद्ध किये जा रहा है। विलक्षण नाग साहिब को प्रणाम कर आकाश में उड़कर लुप्त हो गया। यह देख सब भक्तजन साहिब की जय-जयकार के जैकारे लगाने लगे।

नीचा दिखावन हेतु साहिब को, ऐसा नाग ले आये।
विलक्षण नाग अत डरावना, डसते ही मर जाये॥
नाग फूंकारे मारता, दिया साहिब पर छोड़।
कर प्रणाम साहिब को, उड़ा आकाश की ओर॥



(25) साहिब जी को सागवान के पेड़ से बाँध कर मरवाया जाना

आशाओं पर पानी फिर रहा था। शेख तकी बहुत परेशान हो रहा था। साहिब को अपने रास्ते से हटाने के सारे प्रयास असफल हो रहे थे। वो जहाँ भी जाता, उसके कानों में साहिब की प्रशंसा ही सुनाई पड़ती। इससे उसके हृदय की क्रोधाग्नि और बढ़ती जा रही थी। ऐसे में किसी ने उसे बताया कि **यदि किसी को सागवान के पेड़ के साथ चाँदी की तारों से बाँध दिया जाए तो उसकी जीवन लीला समाप्त हो जाती है।** बौखलाए हुये शेख तकी ने साहिब को मारने का यह षड्यंत्र बिना विचार किये स्वीकार कर लिया। क्योंकि उसका लक्ष्य था कि किसी भी तरह से साहिब को अपने रास्ते से हटाया जाए।

भक्ति साहिब कबीर की, चारों ओर बढ़ती जाये।
रोज बड़ाई सुनते सुनते, तकी को नींद न आये॥

उसने सोचा कि ऐसा करके भी देख लेते हैं। शेख तकी साहिब को घुमाने के बहाने साथ ले गया। रास्ते में जहाँ सागवान के पेड़ थे, वहाँ पहुँचकर रुक गया और साहिब को पेड़ के साथ खड़ा होने को कहा। साहिब उसके कहे अनुसार बिना किसी डर के वहाँ खड़े हो गये। शेख तकी ने सिपाहियों को आदेश दिया कि कबीर को चाँदी की तारों के साथ इस पेड़ से बाँध दो। सिपाहियों ने साहिब को पेड़ के साथ बाँध दिया पर सब बेकार ही गया। साहिब का तो कुछ बिगड़ा ही नहीं। तकी मारे लज्जा के मुँह छिपाकर वहाँ से चला गया।

तार चाँदी से बाँध दिया, साहिब पुरुष कबीर।
कुछ न बिगड़ा साहिब का, हार गया तकी पीर॥



(26) नीरू, नीमा और भक्तजनों को कत्ल करवाया

साहिब की बढ़ती हुई प्रसिद्धी को देख शेख तकी और भी तिलमला उठा। सिपाहियों को हुक्म दिया कि नीरू-नीमा और अन्य भक्तजन, जो कबीर के शिष्य हैं, उन्हें पकड़ कर हमारे पास लाओ। उसकी आज्ञानुसार सबको पकड़कर लाया गया तो शेख तकी ने अपनी तलवार उठाई और सबके गले काट दिये। जब साहिब को इस बात का पता चला तो वे शेख तकी के पास आये और आकर शेख तकी से कहने लगे कि वाह! पीर जी, बड़ा बहादुरी वाला काम किया है, क्या पीरों के यही काम होते हैं! इन्होंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था, जो तुमने इनको कत्ल किया! तुम्हारी दुश्मनी तो मेरे साथ है।

साहिब ने उसी समय एक ऐसी तान सुनाई कि सब जीवित हो उठ खड़े हुए। सब साहिब की जय-जयकार करने लगे। अब शेख तकी को बहुत शर्मिंदगी महसूस हो रही थी। उसे अपने किये पर बहुत पछतावा भी हुआ। वो साहिब के चरणों पर गिरकर क्षमा माँगने लगा। दया के सागर साहिब ने उसे इस भूल पर भी क्षमा कर दिया पर शेख तकी अन्दर से बहुत घबराया हुआ था।

क्रोध अग्नि से जलते हुए, धर्म गुरु पकड़ी तलवार।
नीरु नीमा और शिष्य अनेका, सबको दीया मार॥
आ नजदीक बोले साहिब, यही पीरों के काम।
क्या बिगाड़ा इन्होंने तेरा, गले पै चली तलवार॥



(27) साहिब जी को सात खण्डों वाले मकान में तालों से बंद कर मरवाया जाना

एक सहयोगी ने शेख तकी को साहिब के ख़िलाफ़ एक तरकीब बताई कि क्यों न कबीर को अनेक तालों के अंदर बंद कर दिया जाए जिससे कबीर बाहर नहीं आ सकेगा और मारे भूख-प्यास से तड़प-तड़पकर मर जाएगा। शेख तकी इस षडयंत्र से बड़ा खुश हुआ। उसने फौरन सिपाहियों को आदेश दिया कि नगर में कोई ऐसा मकान देखो, जिसमें बहुत सारे खण्ड हों जिनको अलग-अलग ताला लग सके। सिपाहियों को सात खण्डों वाला एक मकान मिल गया और आकर तकी को इस बात की सूचना दी। तकी ने उनके साथ जाकर वो मकान देखा। शेख तकी ने उस मकान के सातवें खण्ड में साहिब के बैठने के लिए एक आसन लगवा दिया और साहिब को उस आसन पर बैठने को कहा। साहिब तो अन्तर्यामी थे पर वे उसके काम में बाधा नहीं पहुँचाते थे। वो जो करता, उसे करने देते। सब कुछ जानते हुए भी साहिब उस आसन पर विराजमान हो गये। साहिब के आसन पर बैठते ही शेख तकी ने सिपाहियों को इशारा कर दिया। सिपाहियों ने बाहर से ताला लगा दिया और फिर एक-एक करके सब खण्डों के द्वार बंद होने लगे और उनमें ताले लगते गए। जब सिपाहियों ने सातवें खण्ड पर भी ताला लगाकर शेख तकी की ओर मुँह किया तो साहिब को वहाँ पर खड़े पाया। यह देख सभी अत्यंत हैरान हुए और शेख तकी को मारे लज्जा के मुँह छुपाए वहाँ से जाना पड़ा।

सात खण्डों में ताले लगाकर, बंद किया साहिब कबीर।
तड़प तड़प कर मर जायेगा, खुश हुआ तकी पीर।।
सातवां ताला लगा मुख फेरा, आगे खड़े पुरुष कबीर।।

बावन कसनी (कबीर साहिब को 52 बार सजाए मौत दी गई)



(28) साहिब जी को नीम के पेड़ के साथ बाँध कर मरवाया जाना

शेख तकी ने मौलवियों और पंडितों की सलाह से साहिब को नीम के पेड़ से बाँध कर मारने का षडयंत्र रच लिया। जब साहिब को नीम के पेड़ के पास ले जाकर पेड़ के साथ खड़े होने को कहा तो साहिब उनकी बात मान पेड़ के साथ खड़े हो गये। शेख तकी साहिब की जहाँ–जहाँ कसनी लेता था, वहाँ–वहाँ बहुत सारे लोग भी साथ ले जाता था, ताकि साहिब की छवि को सबके सामने बिगाड़ सके पर होता उल्टा ही था। साहिब भी लोगों को यह दिखाने के लिए कि ये धार्मिक पाखण्डी लोग हैं, उसकी हर बात को मंजूर कर लेते थे ताकि लोग उनके चुंगल में न फँसें और हो भी यही रहा था। भोली–भाली जनता जो पाखण्डियों के जाल में फँसी थी उनको छोड़ कर धीरे–धीरे साहिब की शरण में आने लगी थी।

जब साहिब नीम के पेड़ के पास खड़े हो गये तो तकी ने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि कबीर को लोहे की तारों के साथ इस पेड़ के साथ बाँध दो। सैनिकों ने हुक्म का पालन किया और **साहिब को लोहे की मजबूत तारों से उस पेड़ के साथ बाँध दिया।** उसने सोचा कि अब तो कबीर भूख–प्यास के मारे प्राण त्याग देगा पर वो इस सत्य से बेख़बर था। साहिब की देही तो केवल देखने के लिए थी। उसका यह प्रयास भी बेकार ही गया। साहिब का वो कुछ नहीं बिगाड़ पाया।

हो इक्टठे धर्म के अगुवा, तार से बाँधो साहिब कबीर।
भूख प्यास से मर जायेगा, सोची मारन की तरकीब॥
कुछ न बिगड़ा साहिब का, शब्द स्वरुपी साहिब शरीर।
अन्न आहार कुछ न कर्ता, समझ न पाये मूर्ख पीर॥



(29) साहिब जी को दीवार में चिनवाया गया

साहिब की ख्याति दिनों-दिन बढ़ती देख ईर्ष्या की आग में जलते हुए एक समय मौलवियों और पंडितों ने शेख तकी को सलाह दी कि कबीर को दीवार में चिनवा कर मार देते हैं। तकी पहले से ही किसी योजना की तलाश में था। उसने यह सलाह भी स्वीकार कर ली। धुर्म गुरु शेख तकी ने कुशल मिस्त्री और मजदूरों को बुलवाया और उन्हें समझा दिया कि तुम्हें कबीर को दीवार में चिनना है, इसलिए दीवार बड़ी मज़बूत बननी चाहिए। जब दीवार बनाने का सारा मसाला तैयार हो गया तो शेख तकी कबीर साहिब को बुलाकर ले आया और कहा कि आप यहाँ पर खड़े हो जाएँ। मिस्त्री यहां पर दीवार बनायेंगे। कबीर साहिब बिना किसी झिझक के वहाँ खड़े हो गये। मिस्त्रियों ने शीघ्र ही मज़बूत दीवार तैयार कर दी और साहिब को उसमें चिन कर बंद कर दिया। यह देख शेख तकी के साथी बड़े खुश हुए कि अब साहिब से छुटकारा मिल गया। पर कमाल ऐसा हुआ कि अगले ही पल सबने साहिब को दीवार के बाहर खड़े पाया, जिससे सब हैरान हो गए और लज्जित होकर चले गये। यह देख चारों ओर साहिब की जय-जयकार होने लगी।

सभी पाखण्डी हो इक्ट्ठे, शेख तकी से सलाह बनाई।
करो बन्द दीवार के बीच, मुल्ला मौलवी युक्ति बताई॥
साहिब बन्द हुए दीवार में, सबने मिलकर खुशी मनाई।
दीवार के बाहर साहिब खड़े, संगत जय-जयकार बुलाई॥



(30) साहिब जी को विष का प्याला पिलाया जाना

दयालू साहिब शेख तकी की सब गलतियों को क्षमा किये जा रहे थे पर शेख तकी मारे ईर्ष्या के दिन-रात आग की तरह जल रहा था। वो किसी के भी मुख से साहिब की जय-जयकार सुननी नहीं चाहता था। ऐसे में उसने साहिब को विष का प्याला पिलाने की योजना बनाई। उसने सिपाहियों को आदेश दिया कि अत्यंत प्रभावशाली विष को लाया जाए। सिपाहियों ने आदेश का पालन कर बहुत प्रभावशाली विष पेश किया। शेख तकी ने उस विष को दूध में मिलाया और विष से मिला दूध का प्याला लेकर साहिब के पास आया। शेख तकी ने वो दूध का प्याला साहिब को पीने के लिए कहा। साहिब तो अंतर्यामी थे, सब जानते थे; उन्होंने बिना किसी झिझक के वो प्याला हाथ में लिया। हाथों में लेते ही विष से मिला दूध गायब हो गया। साहिब ने यह कहकर कि यह प्याला तो खाली है इसमें कुछ नहीं, शेख तकी को वो प्याला वापिस कर दिया। शेख तकी अपनी एक और नाकामयाबी पर लज्जित हुआ और वहाँ से निराश होकर चला गया।

अति प्रभावी ज़हर प्याला, साहिब हाथ थमाया।
दूध जहर सब गायब हो गया, जब साहिब हाथ लगाया॥
खाली कह कर ज़हर प्याला, वापस तकी लौटाया।
मारे लज्जा के राज गुरु ने, अपना मुख छुपाया॥



(31) साहिब जी को सखुआ के पेड़ से बाँध कर मरवाया जाना

बादशाह सिकंदर के वजीर अथवा धर्म गुरु पीर शेख तकी को दुखी देख सभी मुल्ला, मौलवियों और पंडितों ने मिलकर एक नया षडयंत्र रचा। उन्हें एक मुल्ला द्वारा मालम पड़ा कि **किसी को सखुआ के पेड़ के साथ सोने की तारों से बाँध दिया जाए तो उसकी जीवन लीला समाप्त हो जाती है।** उन्होंने इस नये षडयंत्र की ख़बर धर्म गुरु शेख तकी को दी। तकी ने उनकी बात झट से स्वीकार कर ली और साहिब की एक और कसनी लेने को तैयार हो गया। उसने सिपाहियों द्वारा सखुआ के पेड़ का पता लगाया। सिपाही शेख तकी को साथ लेकर वहाँ गये और वो पेड़ दिखाया। फिर शेख तकी अपने सिपाहियों, मुल्ला, मौलवियों, पंडितों और साहिब को अपने साथ लेकर वहाँ पहुँचा। शेख तकी ने साहिब से कहा कि आप इस पेड़ के साथ खड़े हो जाएं। बिना देर किये साहिब तुरंत उस पेड़ के साथ खड़े हो गये। शेख तकी ने सिपाहियों को आदेश दिया कि कबीर को सोने की तारों से इस पेड़ के साथ बाँध दिया जाये। सिपाहियों ने ऐसा ही किया। पर साहिब का कुछ न बिगड़ा क्योंकि उनका शरीर तो पंच भौतिक तत्व का था ही नहीं, जो नष्ट होता। वो तो शब्द स्वरूपी थे, शेख तकी को इस बार भी मुँह की खानी पड़ी। बेइज्जत होकर वह वहाँ से चला गया।

सखुआ पेड़ में स्वर्ण तार से, जो व्यक्ति बंध जाये।
मुल्ला मिलकर सलाह बनाई, सूखे वाँग सुख जाये॥
बाँधने हेतु साहिब कबीर, धर्म गुरु फरमान सुनाया।
शब्द स्वरुपी सत्य साहिब को, अब तक कोई बाँध न पाया॥



(32) साहिब जी को जिंदा जलाया जाना

साहिब की बार-बार कसनी लेता हुआ शेख तकी अपनी नाकामयाबी पर घबरा गया था। घबराहट से परेशान होकर वह नित्य नये-नये षड्यंत्र रच रहा था। उसने अपने सभी पाखण्डियों से मिलकर साहिब को जिंदा जलाने की योजना बनाई। किसी ने उसे बताया कि **यदि अलसी के तेल में कपड़ा भिगोकर किसी के ऊपर डाल दो और फिर उसमें आग लगा दो तो वो व्यक्ति शीघ्र ही जलकर मर जाता है।** तकी को योजना पसंद आई। उसने अलसी का तेल और कुछ कपड़े मँगवाए। फिर शेख तकी ने सिपाहियों से कहा कि इन कपड़ों को तेल में अच्छी तरह से भिगोकर साहिब के शरीर पर बाँध दो। सिपाहियों ने हुक्म का पालन किया। साहिब बड़े शांत भाव से उसकी हरकतें देख मुस्करा रहे थे, उसे कुछ कह नहीं रहे थे, क्योंकि साहिब तो अर्न्तयामी थे।

साहिब के शरीर पर तेल से भीगे कपड़ों को आग लगा दी गयी और सारे कपड़े जलकर राख हो गये। पर साहिब का तो कुछ बिगड़ा ही नहीं। उन्हें तो तनिक भी आँच नहीं आई। शेख तकी और उसके सब साथियों को फिर लज्जित होकर जाना पड़ा।

धर्म के ठेकेदारों मिलके, एक नयी तरकीब बनाई।
तेल से भीगा कपड़ा लिपटा, साहिब को आग लगाई॥
कपड़े जलकर राख हो गए, आग साहिब को छू न पाई।
जीव चेतावन आये साहिब, दुनिया उलटा मारन जाई॥



(33) साहिब जी को काठ की कोठरी में बिठाकर आग लगाई गयी

साहिब की बढ़ती हुई रोज-रोज की ख्याति को देख सभी, शेख तकी और उनके साथी मुल्ला, मौलवियों और पंडितों का हृदय क्रोध की आग से जल रहा था। साहिब को रास्ते से हटाने अथवा मारने के लिए नए-नए षड्यंत्र रचे जा रहे थे। एक दिन शेख तकी के साथी पाखण्डियों द्वारा साहिब को काठ की कोठरी में डाल कर आग लगाने की युक्ति बताई गयी। तकी ने युक्ति को सराहते हुए मान लिया। कुशल मिस्त्रियों को बुलवाकर उसने कहा कि ऐसी लकड़ी की कोठरी तैयार करो, जो जल्दी आग पकड़ सके और अंत तक जले। मिस्त्रियों ने शीघ्र ही ऐसी कोठरी तैयार कर दी। फिर शेख तकी साहिब के पास गया और उन्हें उस कोठरी में बैठने को कहा। साहिब भी बिना किसे रुकावट के उसमें बैठ गये। शेख तकी का आदेश पाते ही सिपाहियों ने कोठरी पर तेल छिड़का और उसमें आग लगा दी। कोठरी तो जलकर राख हो गयी, पर साहिब का कुछ नहीं बिगड़ा। यह देख सब हैरान रह गये। साहिब का आग द्वारा कुछ न बिगाड़ पाने वाली बात जंगल की आग की तरह सारे राज्य में फैल गई और चारों ओर साहिब की जय-जयकार होने लगी।

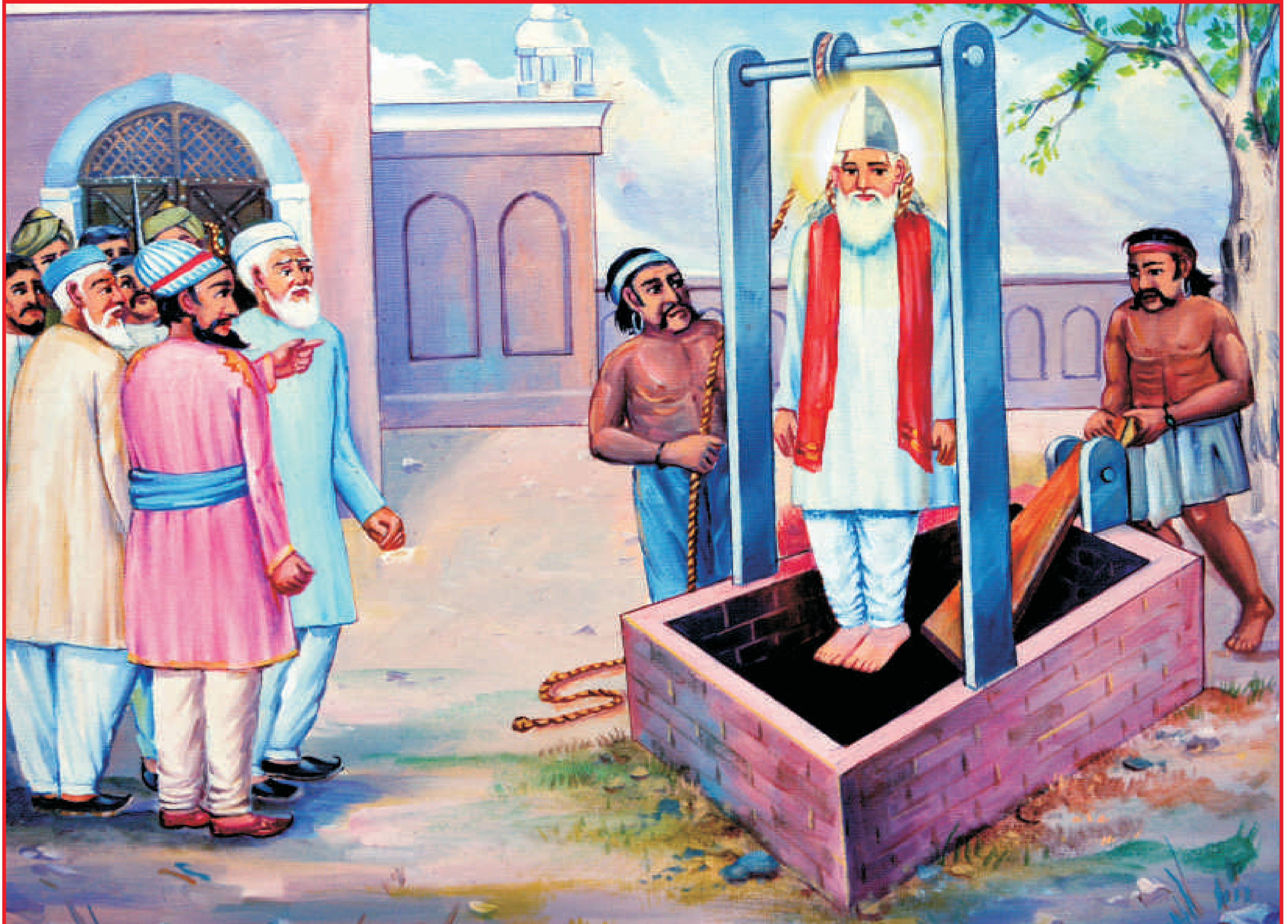
सभी पाखंडियाँ मिलकर एक, काठ कोठरी तैयार कराई।
कबीर गुसाईं बीच बिठाकर, तेल डालकर आग लगाई॥
काठ कोठरी राख बन गई, आग साहिब तक पहुँच न पाई।
यह देख सब चकित रह गए, जयकारों की झड़ी लगाई॥



(34) साहिब जी को फाँसी पर लटकाया जाना

पीरों के पीर कबीर साहिब का शेख तकी कसनियाँ ले लेकर परेशान हो गया था पर वो साहिब का कुछ भी बिगाड़ नहीं पा रहा था। एक दिन धर्म गुरु शेख तकी ने अपने साथी मुल्ला, मौलवियों और पंडितों से मिलकर सलाह बनाई कि क्यों न कबीर को फाँसी पर लटका दिया जाये। उसकी हर कोशिश बेकार हो रही थी। पर वो फिर भी साहिब को पहचान नहीं पा रहा था और साहिब को जादूगर समझ नयी-नयी युक्तियाँ सोच रहा था। पहली योजनाओं में शेख तकी ने कभी साहिब को जिंदा जलाया, कभी सात तालों के अलग-अलग हिस्से वाले मकान में बंद करवाया तथा दीवार में चिनवाया, पर बार-बार वह असफल रहता। क्रोध की आग से जलते हुए शेख तकी ने जल्लादों से फाँसी का तख्ता तैयार करवाया और साहिब को वहाँ ले गया। तकी का हुक्म पाकर जल्लादों ने साहिब को फाँसी पर लटका दिया। साहिब बहुत देर तक उसके साथ झूलते रहे, पर फाँसी का रस्सा साहिब का कुछ भी न बिगाड़ सका। यह देख शेख तकी और उनके पाखण्डी साथी बड़े लज्जित और दुःखी होकर वहाँ से मूँह नीचा करके चले गये।

साहिब को जादूगर समझ, कसनी के नये ढंग बनाये।
हुआ फरमान धर्म गुरु का, फाँसी वाले हुक्म सुनाये॥
तुरंत हुक्म पर अमल हो गया, साहिब को दिया लटकाए।
बड़ी देर तक लटके साहिब, पाखण्डी कुछ बिगाड़ न पाए॥



(35) साहिब जी को गाय के खून से नहलाया जाना

धर्मगुरु होने के साथ-साथ शेख तकी राजा का वज़ीर भी था। वो साहिब को मारने के नये-नये षड्यंत्र रच रहा था जिस कारण हर कोई उसकी आज्ञा का पालन करता था। दूसरी ओर साहिब ने भी राजा से कहकर शेख तकी को अपनी मनमानी करने की छूट दे रखी थी। किसी भी तरह से साहिब का कुछ भी न बिगड़ते देख शेख तकी ने एक बार विचार किया कि क्यों न साहिब को सारे समाज के सामने नीचा दिखाया जाए। यह सोच उसने एक गाय मँगवाई और उसका गला कटवा कर खून एक बर्तन में इक्ट्ठा करवाया। उसने सिपाहियों को समझा दिया कि मेरा इशारा पाकर राजदरबार में यह खून से भरा बर्तन साहिब के सिर पर डाल दिया जाए। जब राजदरबार लगा था और साहिब सबके बीच विराजमान होकर सत्य भक्ति का उपदेश दे रहे थे तब तकी का आदेश पाकर उसके सिपाहियों ने खून से भरा बर्तन साहिब के सिर पर उडेलना शुरू कर दिया। पर यह क्या! सब हैरान थे वो खून तो भाप बनकर ऊपर आकाश में उड़ता चला जा रहा था। जैसे-जैसे वो बर्तन उडेलते थे, वे सब हैरान थे खून उर्द्धमुख होकर आकाश में उड़ता जाता था। शेख तकी ने यह गंदी हरकत साहिब को नीचा दिखाने के लिए की, उन्हें मानसिक पीड़ा देने के लिए की, पर अंत में उसे ही पीड़ा हुई। साहिब की तो सब ओर जय-जयकार ही सुनाई दे रही थी पर शेख तकी लज्जित हो रहा था।

देखो धर्म गुरु का कारा, गाय मार कर खून ले आया।
नीचा दिखावन हेतु साहिब को, शीश पै खून गिराया॥
सत्संग करते साहिब ऊपर, डाला खून कटोरा।
खून भाप बन उड़ गया, अहंकार तकी का तोड़ा॥



(36) साहिब जी को तेज़ धार वाले हथियारों से गड़े हुए कुँए में डाला जाना

क्रोध और ईर्ष्या की आग में जलते हुए एक बार शेख तकी ने अपने सहयोगियों, मुल्लाओं, पंडितों आदि से गंभीर परामर्श करके एक और षड्यंत्र रचा। उन्होंने योजना बनाई कि एक गहरा कुँआ खुदवाकर उसमें नोकीले हथियार लगा कर कबीर को कुँए में डाल दिया जाए। शेख तकी ने योजना स्वीकार कर अमल शुरु कर दिया। शेख तकी ने एक गहरा कुँआ खुदवाकर उसमें तेज़ धार वाले हथियारों को इस तरह गड़वा दिया कि उनकी नोक ऊपर की ओर रहे। फिर एक दिन उसने अपने सिपाहियों को आदेश दिया कि **कबीर को जंज़ीरों से बाँधकर कुँए के पास ले आओ।** वहाँ लाकर धर्म गुरु शेख तकी ने उन्हें आदेश दिया कि कबीर को कुँए में धकेल दो। उन्होंने ऐसा ही किया। शेख तकी को विश्वास था कि उसकी यह युक्ति फेल नहीं होगी और उसे पूर्ण सफलता मिलेगी। जैसे ही जज़ीरों से बाँधे हुए साहिब को उस कुँए में धकेला गया, तकी की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। उसने सोचा कि अब हमेशा के लिए साहिब से छुटकारा मिल ही गया। उसके साथी आपस में साहिब के अंत की बातें कर रहे थे कि साहिब कुँए के बाहर हँसते हुए दिखाई पड़े। सबकी आँखें झुक गईं और सिर नीचा कर सब वहाँ से लज्जित होकर चले गए।

पंडित मुल्ला रचे षडयंत्र, कैसे कबीर को मार मुकाएँ।
तेज नोकीले हथियार कुँए के, बीचो बीच गड़वाए॥
हाथ-पाव बाँध साहिब के कुँए में डलवाया।
खुश हुए सब पाखण्डी, अब छुटकारा पाया॥



(37) साहिब जी को पानी में पारा मिलाकर पिलाना

हर पासे साहिब की जय-जयकार हो रही थी। साथ ही शेख तकी और पंडित, मौलवियों आदि की ईर्ष्या भी बढ़ती जा रही थी। उन्होंने साहिब को मारने के लिए फिर एक नयी योजना बनाई। उन्होंने शेख तकी को सलाह दी कि कबीर का अंत करने के लिए क्यों न उसे पानी में पारा डालकर पिला दिया जाए। पारा तो शरीर से फूट-फूटकर निकलता है और प्राण लेकर ही जाता है। शेख तकी को यह तरकीब बहुत पसंद आई। उसने किसी को भेजकर बाज़ार से पारा मँगवा लिया। फिर शेख तकी ने उसे पानी में इस तरह मिलाया कि पारे के होने का पता नहीं चलता था। पारा मिला पानी का गिलास लेकर शेख तकी साहिब के पास आया और वो पानी साहिब को पीने के लिए दिया। हाथ में गिलास पकड़ते ही वो जल भाप बनकर आकाश में उड़ गया। साहिब ने कहा कि यह गिलास तो खाली है। यह देख शेख तकी बड़ा लज्जित हुआ। साहिब तो अर्न्तयामी थे पर शेख तकी नहीं जानता था कि साहिब क्या चीज़ हैं। शेख तकी तो साहिब को साधारण मनुष्य समझने की भूल कर रहा था।

पंडित मुल्ला सब ने मिलके, नया प्रपंच रचाया।
खुश हुये सब पाखण्डी, पारे से कोई बच न पाया॥
पानी पारे से भरा गिलास, साहिब हाथ थमाया।
पारा पानी उड़ा भाप बन, जब साहिब को पकड़ाया॥



(38) बराह के खून को साहिब जी पर डालना

आम समाज को अपने ईशारों पर चलाने वाले मौलवियों, मुल्लाओं, पंडितों आदि की नींद हराम हो गयी थी। उनकी आमदनी बहुत कम हो गयी थी। वो साहिब की बढ़ती शान न सहते हुए साहिब का अंत करना चाहते थे। अंत नहीं कर पाते तो अपमानित करके नीचा दिखाने की सोचते ताकि लोग साहिब के पास न जाएँ और उनकी आमदनी फिर बढ़ने लगे। उन्होंने षड्यंत्र रचा कि भरी सभा में साहिब के सिर पर बराह का खून डाल कर अपमानित किया जाए।

योजना अनुसार शेख तकी ने अपने सैनिकों को एक बराह लाने को कहा। शेख तकी के आदेश का पालन हो गया, बराह लाया गया। शेख तकी ने आज्ञा दी कि इसे मारकर इसका खून एक बर्तन में भर लो। सैनिकों ने आज्ञा का पालन किया। अब तकी ने अपने एक भरोसे वाले साथी को बुलाकर अपनी इस योजना पर आदेशानुसार कार्य करने की बात समझा दी। साहिब तो सब जानते थे। राजदरबार लगा था, ऐसे समय में तकी की आज्ञा पाकर उसके साथी ने खून से भरे हुए उस बर्तन को साहिब पर उडेलना शुरू किया। पर पहले की तरह ही वो खून हवा में उड़ गया और साहिब पर कोई प्रभाव न पड़ा देख कर शेख तकी को फिर से लज्जित होना पड़ा।

नीचा दिखावन हेतु साहिब को, खून बराह का लाए।
भरा बर्तन सिर पै डालें, खून ऊपर उड़ जाए॥



(39) साहिब जी पर खूंखार चीतों से वार करवाना

क्रोध और ईर्ष्या से भरे हुए शेख तकी ने एक बार पाखण्डियों के साथ मिलकर विचार किया कि जंगल से खूंखार चीते पकड़ कर मंगवाते हैं और उन्हें कुछ दिन भूखा रखकर कबीर पर छोड़ते हैं। सबने इस योजना को मानते हुए अत्यंत सराहा। योजना के अनुसार कुशल शिकारियों को बुलवाकर तकी ने आदेश दे दिया कि जंगल से सात-आठ जीवित चीते पकड़ कर लाए जाएँ। आदेश पाते ही शिकारी जंगल से सात-आठ चीते पकड़कर ले आए। **शेख तकी ने कुछ दिन चीतों को भूखा रखा।** साहिब को एक किले में ले जाकर रुकने को कहा। किले की दीवारों के ऊपर देखने वालों की भीड़ लगी हुई थी। किले में पिंजरा ले जाकर पिंजरे का मुख साहिब की ओर खोलने का आदेश दिया। जब चीते छोड़े गये तो उन्होंने साहिब पर वार करने का प्रयास किया पर चीते साहिब तक पहुँच नहीं पा रहे थे। फिर सब चीतों ने साहिब के चरणों को चाटा और वापिस चले गये। यह देख तकी के दुख का कोई पार न रहा और बेइज्जत होकर वहाँ से चला गया।

जंगल में जा व्याघ्र चीते, फड़ पिंजरे में होड़े।
कुछ दिनों तक भूखे रखकर, साहिब ऊपर छोड़े॥
पिजरे का मूँह खुलते ही, साहिब ऊपर झपटे।
जब साहिब तक पहुँच न पाए, सब चरणों में लिपटे॥
चरण चाटकर चले गए, पल भर पास न अटके॥



(40) काठ के कठखोले में साहिब जी को खड़ा कर पैरों पर कीलें ठुकवाना

धर्म गुरु शेख तकी की सभी योजनाएँ फेल हो रही थीं। हर बार जब–जब उसे हार का सामना करना पड़ता, तब उसकी ईर्ष्या और बढ़ती जाती थी। लोग मुल्ला, मौलवियों, पंडितों के चंगुल से बचकर साहिब की सत्य भक्ति में बड़ी तेजी से आने लगे जिस कारण सब साहिब के खिलाफ हो गये थे। पर कुछ धर्मों के अगुवा साहिब को समझकर उनकी शरण में भी आने लग गये थे। दूसरी ओर धर्म गुरु शेख तकी की ईर्ष्या तो और बढ़ती जाती थी। वो आसानी से हार नहीं मानने वाला था। उसने नयी योजना के अनुसार एक काठ का कठखोला बनवाया।

पंडित मुल्ला और मौलवी, मिल शेख को समझाएँ।
कठखोले में साहिब खड़े कर, पाँव में कील ठुकवाए।।

इस योजना के अनुसार कबीर साहिब को काठ के कठखोले में खड़ा करके उनके पैरों पर कीलें ठोंकनी थीं। वज़ीर शेख तकी साहिब के पास गया और उन्हें साथ लेकर वहाँ आया, जहाँ काठ का कठखोला बनाया गया था। शेख तकी ने साहिब को काठ के कठखोले में खड़ा होने का आदेश दिया। शेख तकी के कहने की देरी थी कि साहिब उस कठखोले में खड़े हो गये। तब शेख तकी ने सिपाहियों को आदेश दिया कि साहिब के पैरों पर कीलें ठोंकी जाएँ। सिपाही हाथों में हथोड़े पकड़ कर कीलें ठोंकने लगे। सिपाहियों ने बड़ा प्रयास किया, पर एक भी कील साहिब के पैरों पर नहीं ठोंक सके। अंत में शेख तकी और पंडित, मौलवी लज्जित होकर वहाँ से चले गए।



(41) लोहे को गलाकर साहिब जी के ऊपर डलवाना

पाखण्डियों के पाखण्ड से लोगों को सावधान करते हुए साहिब ने कुरीतियों पर प्रहार किया। धार्मिक पाखण्डी साहिब से बहुत परेशान थे। वे सब शेख तकी को साहिब का अंत करने के लिए तरह-तरह के सुझाव देते रहते थे। सब मिलकर साहिब को अपने रास्ते से हटाने की सोच रहे थे। सबने तकी को सुझाव दिया कि क्यों न कबीर के ऊपर गर्म लोहा पिघलाकर डाला जाए। ऐसे में कबीर का जिंदा रहना संभव नहीं होगा। वे पक्का ही मृत्यु को प्राप्त हो जायेगा। इस तरह की हरकतें वह पहले भी कर चुके थे। वो साहिब को जादूगर समझकर विचार करते थे कि हो सकता है कि अब की बार कबीर का जादू न चले और हम साहिब को मारने में सफल हो जाएँ। अब योजना अनुसार लोहे को पिघलाकर पानी की तरह कर दिया गया।

जब राजदरबार में साहिब प्रवचन दे रहे थे, ऐसे में तकी ने अपने सैनिकों को आज्ञा दी कि यह पिघला हुआ लोहा कबीर के ऊपर डाल दो। तकी के हुक्म से पिघले लोहे को सैनिकों ने भरे राजदरबार में साहिब के ऊपर डालना शुरू किया। यह क्या, लोहे का अग्नि तत्व ही समाप्त हो गया और पिघले लोहे की साहिब पर फूलों की तरह वर्षा होने लगी। सब साहिब की जय-जयकार करने लगे। उन्होंने अपनी हरकतों से साहिब के प्रति लोगों की श्रद्धा और बढ़ा दी।

पिघले लोहे का भरा कटोरा, साहिब ऊपर डाला।
पानी की तरह गिरता लोहा, बनी फूलों की माला॥



(42) साहिब जी को पत्थर पीसने वाली चक्की में खड़ा किया जाना

ईर्ष्या से शेख तकी जल रहा था। वो साहिब को मार कर सदा-सदा के लिए अपने रास्ते से हटाना चाहता था। साहिब की बढ़ती हुई प्रसिद्धी को समाप्त करने के लिए वह जितने उपाय करता था, उसका असर उल्टा ही होता था। वह तो एक प्रचारक की तरह साहिब की प्रसिद्धी को दूर-दूर तक फैला रहा था। जो भी कसनियों की बात सुनता और साहिब के कौतक को सुनता वो ही साहिब का भक्त बन जाता। इससे तकी का क्रोध और बढ़ता जाता। वो फिर कोई षडयंत्र रचता था। एक दिन उसने पत्थर पीसने वाली मशीन को देखा तो विचार किया कि क्यों न कबीर को इस मशीन में डाला जाए, जिससे कबीर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ। समय पाकर एक दिन तकी साहिब को उस चक्की के पास ले गया। साहिब तो अंतर्यामी थे। वे सब जानते हुए भी उसे छूट दे रहे थे, क्योंकि वो तो प्रचारक की तरह लगा हुआ था। शेख तकी ने सिपाहियों को हुक्म दिया कि कबीर को इस चक्की में डाल दो। हुक्म का पालन हुआ और साहिब ने भी कोई विरोध नहीं किया। चक्की चल रही थी। तकी ने सोचा कि आज साहिब से छुटकारा मिल जाएगा पर ऐसा नहीं हुआ। साहिब का तो कुछ भी नहीं बिगड़ा। शब्द स्वरूपी होने के कारण साहिब पर कोई असर न हुआ।

पत्थर पिसती चक्की में साहिब को दिया डाल।
चलती चक्की साहिब का, कुछ न सकी बिगाड़॥



(43) साहिब जी को गहरे गड्ढे में डलवाना

बार–बार कसनी लेकर हारा हुआ धर्म गुरु साहिब को मारने का नित्य नया ढंग अपनाता रहता जिससे साहिब की सत्य भक्ति का संदेश लोगों तक और ज्यादा जाता। जैसे ही शेख तकी की योजनाएँ असफल होतीं, उसके क्रोध की आग और बढ़ जाती। शेख तकी और उसके साथियों ने विचार किया कि कबीर को ज़मीन में गहरा गड्ढा खोदकर गाड़ देते हैं। शेख तकी ने मजदूरों को बुलाकर एक स्थान पर गहरा गड्ढा खोदने का आदेश दिया। मजदूरों ने जल्दी ही एक गहरा गड्ढा खोद डाला। अब शेख तकी साहिब के पास गया और उन्हें साथ लेकर उस गड्ढे के पास लाया। तकी ने साहिब को उस गड्ढे में बैठने के लिए कहा। चुपचाप साहिब शांत भाव से उस गड्ढे में बैठ गये। शेख तकी ने मजदूरों को आदेश दिया कि फौरन इस गड्ढे को मिट्टी से भर दो। हुक्म का पालन करते हुए मजदूरों ने बहुत जल्दी उस गड्ढे को मिट्टी से भर दिया। जब गड्ढा पूरी तरह से भर गया तो साहिब बाहर खड़े–खड़े मुस्करा रहे थे। यह देख शेख तकी और उसके साथियों का लज्जा से सिर झुक गया और वे चले गए।

मारन हेतु सब ने मिल के, गहरा खड्डा खुदवाया।
खड्डे में साहिब बैठन को, तकी हुक्म सुनाया॥
झट से गड्डा धर्म गुरु ने, मिट्टी से भरवाया।
बाहर खड़े मुसकाते साहिब, देख पाखण्डिआँ मुख छुपाया॥



(44) साहिब जी को क्रूश पर खड़ा किया जाना

बार–बार साहिब की इतनी कसनियाँ लेने के बाद भी मूर्ख पाखण्डियों को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि साहिब तो इंसान ही नहीं हैं। उनका शरीर तो मात्र देखने के लिए है असल में वो तो शब्द सरुपी हैं। वे अभी भी साहिब को जादूगर समझकर मिटाने का प्रयास कर रहे थे। सबने मिलकर विचार किया कि कबीर को क्रूश पर खड़ा करके कीलें ठुकवाकर मार देते हैं। जब यह षडयंत्र शेख तकी को मालम हुआ तो वो बड़ा खुश हुआ। उसने इस योजना को मान लिया। शेख तकी साहिब के पास गया और उन्हें अपने साथ क्रूश वाले स्थान पर ले आया। वहाँ पहुँचकर तकी ने साहिब से कहा कि आप इस क्रूश पर खड़े हो जाओ। बेखौफ साहिब भी मानो इसी इंतज़ार में थे, क्योंकि वे तो लोगों को यही बताना चाह रहे थे कि देख लो, ये धार्मिक पाखण्डी असल में कितने क्रूर हैं, कितने धोखेबाज हैं। हुक्म पा कर जब साहिब उस क्रूश पर खड़े हो गये तो तकी ने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया कि **काँटों की टोपी कबीर के सिर पर रख कर हाथों और पाँव में कीलें ठोक दो।** शेख तकी के हुक्म का पालन हुआ। इस बार भी शेख तकी की योजना विफल हो गई। यह योजना भी साहिब का कुछ न बिगाड़ सकी। उसकी ईर्ष्या अग्नि ज्वाला की तरह बढ़ रही थी।

साहिब मारन को रल पाखण्डी, एक नया परपंच रचाया।
क्रूश पर खड़ा कर साहिब को, काटों का टोप पहिनाया॥
साहिब का तो कुछ न बिगड़ा, पाखिण्डयों का मुख मुरझाया॥



(45) चक्र से साहिब जी पर प्रहार किया जाना

समय पाकर सहयोगी पाखण्डियों ने सलाह दी कि क्यों न कबीर पर ऐसे चक्र का प्रहार करें, जैसा श्री कृष्ण के पास था। उसने बताया कि कृष्ण जी के चक्र से कोई भी बचकर नहीं जा सकता था। वो चक्र किसी भी विरोधी को मारकर फिर वापिस उनके पास आ जाता था। तकी को यह बात बहुत अच्छी लगी। उसे फिर उम्मीद की एक किरण नज़र आने लगी। उसने ऐसा ही चक्र बनवाया और चक्र चलाने में कुशल चालक को भी बुलवाया। चालक को तकी ने कह दिया कि जब मैं इशारा करूँ, तब ही यह चक्र कबीर पर चलाना है। शेख तकी ने समझा दिया कि कबीर की गर्दन को इस चक्र से अलग करना है। चक्र चालक ने कहा कि आप चिंता न करें, जैसा आप कहे वैसा ही होगा। शेख तकी ने कहा यदि तुम ऐसा कर सके तो तुम्हें बहुत सारा ईनाम मिलेगा। समय आने पर तकी ने चालक को ईशारा किया। ईशारा पाते ही चालक ने चक्र को कबीर पर छोड़ा। सभा में सबने देखा कि चक्र साहिब का चक्कर काटकर वापिस मुड़ा और चलाने वाले का सिर अलग कर दिया। यह देख सब साहिब की जय-जयकार करने लगे। तब बाद में साहिब ने उस चालक को जीवित कर दिया। वो साहिब के चरणों पर गिरकर क्षमा माँगने लगा। दयालु साहिब तो शेख तकी को भी क्षमा किये जा रहे थे, फिर चक्र चालक का कसूर ही कितना था। साहिब जी ने पीर शेख तकी और चालक दोनों को क्षमा कर दिया।

चक्र चलाने में माहिर, चालक एक ले आया।
भरी सभा में साहिब ऊपर, चालक चक्र चलाया॥
चारों ओर चक्र धूमा, रत्ती छू न पाया।
चालक का ही सिर कट गया, जब चक्र वापस आया॥



(46) साहिब जी पर बाना चालक पहलवान द्वारा प्रहार करवाना

रोज-रोज साहिब की बढ़ती हुई ख्याति से परेशान होकर एक दिन विरोधियों ने शेख तकी को सलाह दी कि कबीर के ऊपर बाना चालक पहलवान द्वारा प्रहार करवाकर मरवाया जाए। मुसलमानों में ऐसे पट्टा खेलने वाले पहलवान होते हैं। ये पट्टा खेलते हुए बड़े खेल दिखाते हैं। कहा जाता है कि यदि किसी को पट्टा या बाना लग जाए तो वो वहीं मर जाता है। इसी कारण इस खेल को देखने वाले थोड़ा दूर रहकर देखते हैं। शेख तकी ने बाना चलाने वाले पहलवान को बुलवाकर अच्छी तरह से समझाया कि यह खेल दिखाते हुए मेरे इशारे का इंतज़ार करना। जब मैं इशारा करूँ, तुम कबीर पर अपने बाने का प्रहार करना। धर्म गुरु ने उसे बहुत सारे ईनाम का लालच भी दिया। बाना चालक बड़ा खुश हुआ और भरी सभा में पहुँच गया। भरी सभा में जब साहिब सत्य भक्ति का संदेश दे रहे थे तो बाना चालक ने वहाँ अपना खेल दिखाना शुरू कर दिया। बाना चालक का बाना तो साहिब के शरीर को छू भी नहीं पा रहा था।

भारी लालच दे पाखण्डियां, चालक को सब समझाया।
पा ईशारा पहलवां, बाना साहिब पर बरसाया॥
बाना साहिब को छू न पाए, बड़ा जोर लगाया॥

अंत में पहलवान लगातार साहिब पर प्रहार करने लगा। लोग देख रहे थे कि बाने ने चालक के सिर पर ही प्रहार कर दिया, जिससे पहलवान के सिर के टुकड़े-टुकड़े हो गये। यह दृश्य देख सब साहिब की जय-जयकार करने लगे। साहिब ने एक बार फिर अपनी दयालुता का परिचय देते हुए बाना चालक को पुनः जीवित कर दिया। यह देखकर शेख तकी और उसके पाखण्डी साथी बहुत लज्जित हुए।

बाने उलटा चालक का सिर, टुकड़-टुकड़ कर डाला।
दयालू साहिब ने चालक को, पुनः जीवन दे डाला॥



(47) धनुष बाण से साहिब जी को मरवाया जाना

लगातार साहिब को मारने में विफल हो रहे शेख तकी को दुखी देख उसके साथी मौलवी ने उसे एक तरकीब बताई कि क्यों न कबीर को धनुष बाण से मरवाया जाए। उसने शेख तकी को समझाया कि पहले समय में बाण चलाने वाला छिपकर भी बाण चलाता था और जिस पर चलाया जाता था, उसे मालम ही नहीं होता था। छिपकर बाण चलाने से कबीर कोई जादू भी नहीं कर सकेगा और उसका अंत हो जायेगा। शेख तकी को तरकीब बड़ी प्यारी लगी। उसने धनुष बाण चलाने में कुशल व्यक्ति को लाने की आज्ञा दी। जब उसके सैनिक ऐसे व्यक्ति को ले आए तो शेख तकी ने उसे उसका काम बता दिया। तकी ने साथ ही उसे कह दिया कि यदि तुम अपने काम में सफल हो गये तो मूँह मांगा ईनाम दिया जायेगा। बाण–चालक ने बात स्वीकार कर ली। शेख तकी ने कह दिया कि तुम मेरे इशारे का इंतज़ार करना। साहिब भरे दरबार में सत्य भक्ति का गुणगान करते हुये भक्तजनों को निहाल कर रहे थे तो तकी का इशारा पाकर धनुषधारी ने छिपकर साहिब पर तीर चलाने शुरू कर दिये। वो बाण तो चलाता था, पर उसके बाण साहिब के चरणों को स्पर्श करके फिर उसके तरकश में वापिस लौट आते थे। धनुषधारी ने बड़े बाण चलाए, पर जब साहिब का कुछ न बिगाड़ सका तो यह कौतक देखकर धनुषधारी उल्टे पाँव भाग खड़ा हुआ। शेख तकी की निराशा का कोई अंत न रहा। वह घबरा कर इधर–उधर देखने लगा और साहिब की जय–जयकार होने लगी।

छिपकर बाण चलाओ साहिब पर, वो जादू न कर पाये।
लगे दरबार में धनुषधारी ने, कई बाण चलाये॥
तीर चरणों का पा स्पर्श, मुड़ तरकश में आये।
घबराकर चालक हुआ व्याकुल, भागा जान बचाये॥

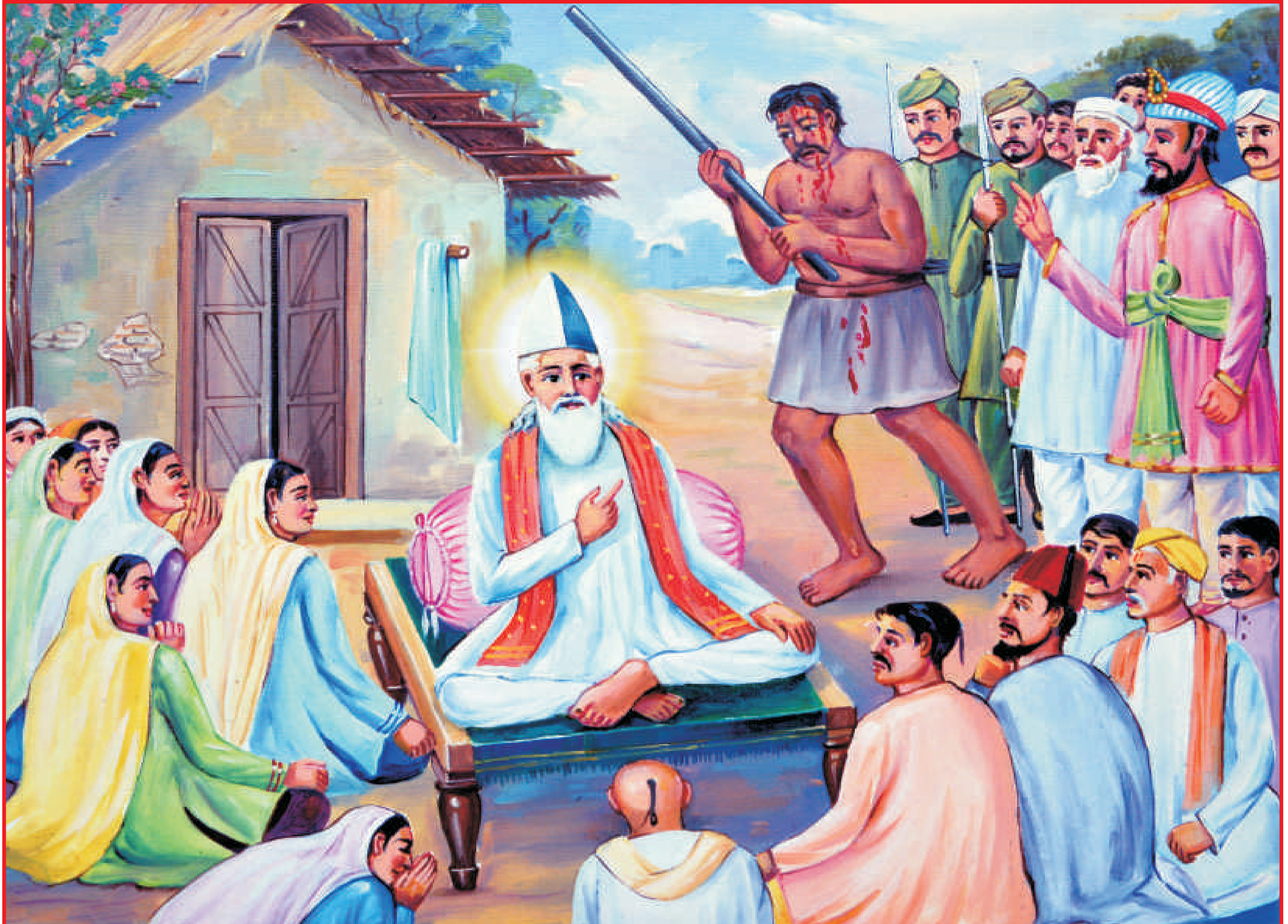


(48) साहिब जी को योद्धा द्वारा लट्ठों से मरवाया जाना

बार-बार लज्जित हो रहे धर्म गुरु शेख तकी को मौलवियों, मुल्लाओं और पंडितों ने सलाह दी कि कबीर को किसी योद्धा द्वारा लट्ठों से मरवा देते हैं। हो सकता है कि वो कबीर का अंत कर दे। बौखलाया हुआ तकी यह भी आजमाने को तैयार हो गया। उसने सैनिकों को एक ताकतवर योद्धा को खोज लाने का हुक्म दिया। सैनिक योद्धा की खोज में चल पड़े और एक ताकतवर योद्धा को खोज लाए, जो लट्ठ चलाने में बड़ा ही माहिर था। तकी ने योद्धा से कहा कि तुम अपने लट्ठ से कबीर को मार दोगे तो तुम्हें मुँह माँगा ईनाम दिया जायेगा। योद्धा ने स्वीकार कर लिया। तकी ने कहा मेरे इशारे का इन्तजार करना।

आम तौर पर तकी तब आदेश देता जब साहिब श्रद्धालुओं के बीच बैठे होते थे, उन्हें प्रवचन दे रहे होते थे। ऐसा वो इसलिए करता ताकि साहिब को सबके सामने मार सके। जब साहिब सत्संग कर रहे थे तब शेख तकी का इशारा पाते ही योद्धा ने साहिब पर अंधाधुंध प्रहार करने शुरू कर दिये पर साहिब पर उन लट्ठों का कोई भी असर न हुआ। लट्ठ तो फूलों की तरह साहिब पर लग रहे थे। योद्धा भी साहिब पर अपने लट्ठों का कोई असर न देख बड़ा दुखी हुआ। आख़िर जब लट्ठ उल्टा उसके ऊपर बरसा और उसे खून निकलने लगा तो वह हार मानकर निराश होकर वहाँ से भाग गया। तकी को इस बात से अथाह लज्जित होकर जाना पढ़ा।

लट्ठधारी ताकतवर योद्धा, तकी पास ले आये।
सत्संग करते साहिब पर, पहिलवान लट्ठ चलाये॥
लट्ठ साहिब को छू न पाये, पलट योद्धा सिर लागा।
खून से लथ-पथ हुआ पहलवान, हार मान कर भागा॥



(49) साहिब जी को कोड़ों से मरवाया जाना

शेख तकी साहिब को जल्दी से जल्दी मिटाना चाहता था। उसकी कोई भी तरकीब कामयाब नहीं हो रही थी। वो सोचता था कबीर कोई जादूगर है। उसने पंडित ओर मुल्ला की सलाह पर साहिब को कोड़ों से मरवाने का फैसला कर लिया। बौखलाया हुआ शेख तकी साहिब को रास्ते से हटाने के लिए हर किसी की बात मान लेता था। इसलिए उसने कोड़ों वाली बात भी मान ली और अपने सिपाहियों को हुक्म दिया कि किसी ऐसे आदमी को खोजकर लाओ जो कोड़े चलाने में कुशल हो। जब ऐसा व्यक्ति खोजकर लाया गया तो शेख तकी ने उसे समझा दिया कि उसे क्या करना है। जब साहिब भक्तजनों को प्रवचन सुना रहे थे, तब शेख तकी के इशारे पर उसने साहिब पर कोड़ों की वर्षा कर दी। पर कोड़ों से साहिब की शब्द स्वरूपी देही पर कोई असर नहीं हो रहा था और न ही कोई निशान पढ़ रहा था। साहिब तो भक्तजनों को सत्य भक्ति का उपदेश देने में मगन थे। कोड़ों का असर न होते हुये देख कोड़े चलाने वाला बड़ा परेशान हो गया और आखिरकार थक कर वहाँ से भाग खड़ा हुआ। यह देख भक्तजन साहिब की जय-जयकार करने लगे। शेख तकी और उनके सभी साथी लज्जित होकर वहाँ खड़े होकर साहिब की ओर देखते रह गए।

हुआ फैसला साहिब को, कोड़ों से मार मुकाने का।
धर्म गुरु ने हुकम दिया, सत्संग में कोड़े लगाने का॥
वर्षा की तरह कोड़े बरसें, कोड़े वाला गया थक हार।
सब का सिर नीवा हुआ, साहिब की सुन जय-जयकार॥



(50) साहिब जी को तेल के कोल्हू में डलवाना

शेख तकी द्वारा बार–बार साहिब की कसनी लेने से बादशाह बहुत दुःखी था क्योंकि बादशाह सिकंदर साहिब को स्वयं खुदा मानता था। बादशाह की साहिब के प्रति श्रद्धा को देख, धर्म गुरु शेख तकी ईर्ष्या में इतना जल रहा था कि उसे साहिब को मारने के सिवाय और कुछ सूझता ही नहीं था। इसलिए वो आए दिन अपने साथियों से मिलकर साहिब को मारने के नये–नये ढंग सोचता रहता। एक दिन वो अपने साथियों के साथ कहीं जा रहा था तो रास्ते में तेल का कोल्हू चलते देखा। सबका ध्यान उस ओर गया। बस! फिर क्या था, सबने विचार रखा कि कबीर को मारने के लिए यह तरीका भी अपनाकर देख लेते हैं। हो सकता है कि इस युक्ति से कबीर का अंत हो जाए। शेख तकी को भी यह सलाह ठीक लगी। वो एक दिन साहिब को घूमने के बहाने ले गया। अर्न्तयामी साहिब तो सब जानते थे। शेख तकी ने उस तेल के कोल्हू के पास पहुँचकर साहिब से कहा कि आप इस ओखली में खड़े हो जाओ। साहिब भी आदेश के ही इंतज़ार में थे। वो तो मुस्कराते हुये उसमें खड़े हो गये। तभी शेख तकी ने कोल्हू चलाने वाले को कोल्हू चलाने का हुक्म दिया। हुक्म सुनते ही कोल्हू वाले ने कोल्हू चला दिया। कोल्हू चलता रहा, साहिब खड़े मुस्कराते रहे। कोहलू साहिब का कुछ न बिगाड़ पाया। यह देख तकी और उसके साथी बड़े हैरान हुये और अपनी हार से बेइज्जत होकर वहाँ से चल दिये।

कोल्हू में साहिब को पीड़ो, सबने मिल विचार बनाया।
ओखली में खड़े होने का, साहिब को हुक्म सुनाया।।
झट से सब ने किया ईशारा, कोल्हू वाले कोल्हू चलाया।
चलता कोल्हू साहिब ऊपर, कुछ बिगाड़ न पाया।।



(51) साहिब जी को इमली के पेड़ के साथ बाँध कर कीलें गड़वाना

चारों ओर पूरे देश में साहिब की सत्य भक्ति की प्रसिद्धी फैल गई थी और भक्तजन बड़ी गिनती में साहिब की शरण में आने लगे थे। दूसरी ओर धर्म गुरु और उनके साथी बार-बार अपनी हार के कारण परेशान हो रहे थे। इतने में किसी ने सलाह दी कि कबीर को इमली के पेड़ के साथ बाँध देते हैं। तकी ने उदास मन से यह युक्ति भी स्वीकार कर ली और साहिब को उस पेड़ के पास लाकर कहा कि आप इस पेड़ के पास खड़े हो जाओ। अर्न्तयामी साहिब तो उनके मन की बात को जानते थे और मुस्ककाते हुये वहाँ खड़े हो गये। तकी ने सिपाहियों को आदेश दिया कि कबीर को इमली के पेड़ के साथ बाँध दिया जाये और उसके माथे और छाती पर कीलें गाड़ दो। धर्म गुरु शेख तकी ने सोचा कि कबीर तड़पकर मर जायेगा। तकी के आदेश का पालन करते हुए सिपाहियों ने ऐसा ही किया। वे हथौड़ों से साहिब के माथे और छाती पर कीलें गाड़ने लगे। पर कोई यह नहीं जान पा रहा था कि साहिब का शरीर तो मात्र देखने के लिए था वो तो शब्द स्वरूपी हैं। सिपाही साहिब की छाती और माथे तक अपनी कीलें ले जा ही नहीं पा रहे थे। कीलें उनके हाथों से छूट-छूटकर नीचे पृथ्वी पर गिर रही थीं। सिपाहियों ने शेख तकी से कहा कि हमारे हाथ काम नहीं कर पा रहे हैं। कीले हाथ से नीचे गिर जाती हैं। यह सुनकर शेख तकी और उनके सलाहकार बड़ा ही लज्जित हुए। ऐसे में वो कर ही क्या सकते थे।

पाखण्डी देख शान साहिब की, हो गए लाल-पीले।
इमली पेड़ से बाँध साहिब को, लगे गाड़ने कीलें॥
कीलें पकड़ हाथ साहिब और, बड़े तो पड़ जाएँ ढीले॥
सिपाही कहें वश नहीं हमरे, गिर रही हाथ से कीलें॥



(52) मृतक कमाली को कब्र से जिन्दा करने को कहा गया

सत्य के पुंज सर्वव्यापी सतगुरु कबीर साहिब को धर्म गुरु शेख तकी बार-बार कसनियां लेकर भी साहिब का कुछ नहीं बिगाड़ सका था। उसको कुछ-कुछ समझ में आ गया था कि साहिब कोई साधारण नहीं हैं, ईलाही व्यक्तित्व हैं। पर फिर भी वह हार नहीं मान रहा था। राजदरबार लगा था, साहिब प्रवचन कर रहे थे। तकी वहाँ पर आया। राजा और सभी लोग धर्मगुरु के सम्मान में उठ खड़े हुये पर साहिब अपने आसन पर ही विराजमान रहे। यह देख तकी अधिक क्रोधित हुआ और राजा से कहा कि आप तो इस कबीर को खुदा का रूप मानते हैं। यदि यह सच में खुदा का रूप है तो मेरी बेटी, जो 8 दिन पहले मर गई थी, कब्र से जिंदा करके दिखाए। तब मैं समझूँगा कि यह सच में खुदा का रूप है। बादशाह ने साहिब की ओर देखा और साहिब से मन-ही-मन प्रार्थना की। साहिब ने राजा की बात मान ली और सबके साथ बेटी की कब्र पर पहुँचे। अब साहिब ने कहा-उठ शेख तकी की बेटी! पर वो नहीं उठी। साहिब ने फिर कहा-उठ तकी की बेटी! पर वो फिर भी नहीं उठी। तब साहिब ने कहा-उठ कबीर की बेटी! साहिब जी ने इतना ही कहा कि कब्र फट गई और लड़की उसी समय कब्र में से उठकर खड़ी हो गयी और साहिब के चरणों में लिपट गयी। सब साहिब की जय-जयकार करने लगे। अचनचेत राजा के मुँह से निकला-हे साहिब! आपने तो पुनः कमाल कर दिया। राजा के मुख से ये शब्द सुन साहिब ने उस कन्या का नाम भी कमाल की तरह 'कमाली' ही रखा।

मुर्दा लाश जीवित हुई, जब साहिब शब्द उचारा।
देख कमाल दंग रहे सब, साहिबा नाम कमाली पुकारा॥

धर्म गुरु अपनी बेटी से कहने लगा कि अब घर चलो। कन्या ने शेख तकी के साथ जाने से मना कर दिया और कहा जब साहिब जी ने कहा **उठ शेख तकी की बेटी** मैं नहीं उठी। जब साहिब ने माता का नाम लेकर कहा, **उठ तकी की बेटी** मैं तब भी नहीं उठी। जब साहिब जी ने कहा **उठ कबीर की बेटी** तो मैं कबर से बाहर आ गई। अब मैं कबीर साहिब की बेटी हूँ। आपने तो मुझे गाड़ दिया था, पर साहिब ने ही मुझे जीवन दान दिया। फिर लड़की ने सबको उपदेश दिया कि कबीर साहिब स्वयं ही खुदा हैं। ये तो जीवों को संसार-सागर से पार लगाने के लिए आए हैं। पिता की ओर देखकर वो बोली कि आप अपनी ईर्ष्या को छोड़ दो और साहिब की शरण ग्रहण करो। इसी में आपकी भलाई है। अपनी बेटी के मुख से ये शब्द सुन तकी का सारा अज्ञान जाता रहा और वो साहिब के चरणों में लिपट गया।



वेद हमारा भेद है, हम वेदन के माहिं।
जौन भेद में मैं बसौ, वेदौ जानत नाहिं॥

कुरान शरीफ कह रहा है 'बेचूना खुदा'। बेचूना अर्थात् निराकार। ईसा मसीह भी कह रहे हैं मेरा आकाशी पिता (स्वर्गीय पिता) मैं उसका इकलौता पुत्र हूँ। अकाशी पिता अर्थात् निराकार। वेद भी निराकार की बात कह रहा है। **जेजे दृश्यम तेते अनित्यम्। जेजे अदृश्यम तेते नित्यम्।** यानि निराकार। हमारे सभी धार्मिक ग्रन्थ भी निराकार तक की बात कहते हैं। भाईयों यह निराकार सत्ता वाला जिसको लोग रब्ब कहते हैं, वह 84 लाख योनियों का रचनहार है जो तत्वों में आाकाश तत्व है परन्तु योनियों को चेतन करने वाली जो ऊर्जा है सुरति है वो कोई और चीज़ है तभी तो इस सिरजनहार निराकार को कबीर साहिब जी बोल रहे हैं।

मन ही निराकार, निरंजन जानिए॥
गुप्त भयो है संग सबके। मन निरंजन जानिये॥
निराकार जो वेद बखाने। सोई काल कोई भेद न जाने॥

मुक्ति से सबका तात्पर्य निराकार की प्राप्ति। साहिब बन्दगी पंथ किसी की निन्दा नहीं करता। निराकार सत्ता को भी स्वीकार करता है, लेकिन आगे की बात का संकेत भी देता है। संत सम्राट् कबीर साहिब जी ने न्यारा कहा और निराकार सत्ता से आगे कहा। सगुण भक्ति, निर्गुण भक्ति अथवा पाँच मुद्राओं से आगे कहा।

इसके आगे भेद हमारा। जानेगा कोई जाननहारा॥
कहे कबीर जानेगा सोई। जा पर दया सतगुरु की होई॥

संतों ने आ कर तीन लोक से आगे परम निर्माण, अमर धाम, सत्य लोक अथवा दसवें द्वार से आगे 11वें द्वार का भेद संसार को दिया।

भाईयों साहिब बन्दगी पंथ भी काल पुरुष के काया नाम और अमर लोक के विदेह नाम का अंतर समझा कर संसार को सत्य भक्ति की ओर ले जा रहा है।

काग पलट हंसा कर दीना। ऐसा पुरुष नाम मैं दीना॥
अकह नाम, लिखा न जाई, पढ़ा न जाई। बिन सतगुरु कोई नाहि पाई॥